पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

मार्गशीर्ष-पौष, कलियुगाब्द 5117, दिसम्बर, 2015

जैविक खेती, गोपालन व अस्पृश्यता निवारण की अनूठी पहल

एसजेवीएन विश्व पटल पर

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भूटान में 600 मेगावाट की जल विद्युत परियोजना का शिलान्यास किया गया

2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि

- हिमाचल प्रदेश में 412 मेगावाट की रामपुर जल विद्युत परियोजना
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- वित्तीय वर्ष 2011-12 के दौरान 7610 मिलियन यूनिट तथा वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान 7183 मिलियन यूनिट का रिकार्ड विद्युत उत्पादन।
- एकल राज्य से राष्ट्रीय निगम के रूप में विस्तार एवं राष्ट्र की सीमा से बाहर उपस्थिति।
- ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 13 जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण।

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU **www.sjvn.nic.in**

SHARAD/07/2014

निर्माणाधीन परियोजनाएं: 588 मेगावाट लूहरी, 66 मेगावाट धौलासिद्ध (हिमाचल प्रदेश); 252 मेगावाट देवसारी, 60 मेगावाट नैटवार मोरी, 51 मेगावाट जाखोल सांकरी (उत्तराखण्ड); 900 मेगावाट अरुण- III (नेपाल); 600 मेगावाट खोलोंग्चू, 570 मेगावाट वांग्चू (भूटान); 378 मेगावाट कामेंग- I, 60 मेगावाट रंगानदी-II, 80 मेगावाट दोईमुख स्टेज II एवं सी-रिवर बेसिन (अरुणाचल प्रदेश); 1320 मेगावाट बक्सर ताप विद्युत (बिहार);

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृताः

भावार्थ :

भावार्थ–गीता सुगीता कर्म करने का संदेश देती है अर्थात् श्रीगीता जी को भली प्रकार पढ़कर अपने अंतःकरण में धारण करना ही कर्तव्य होना चाहिए, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान श्रीविष्णुजी के मुखार विंद से निकली हुई है।

वर्ष : 15 अंक : 11

मातृवन्दना

मार्गशीर्ष-पौष, कलियुगाब्द 5117, दिसम्बर, 2015

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
जय सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादकः डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

राजभवन बना आचार्य का गुरुकुल

पहली बार राजभवन ने ऐसी इबारत लिख दी है, जिससे प्रदेश के लोगों का भला हो सकेगा। भले ही राज्यपाल का संवैधानिक पद चार दीवारों के भीतर बैठने वाले व्यक्ति की छवि के रूप में जुड़ा हुआ है। लेकिन राज्यपाल ने इस स्थापित परंपरा को किनारे रख दिया है। राज्यपाल के चार सूत्रीय एजेंडा पर राजभवन के सभागार में सरकारी महकमों के अधिकारी भी बेधड़क होकर बोले। पांच घंटे तक चली बैठक के बाद प्रदेश सरकार के समस्त अधिकारियों को समस्याओं के समाधान के साथ ही राजभवन की दहलीज लांघनी होगी। नशे की गिरफ्त में आ चुके प्रदेश के युवाओं को इस बुराई से बाहर निकालने के साथ-साथ देवभूमि में प्राकृतिक खेती व गोपालन को बढ़ाया जाए। ❖

सम्पादकीय	जैविक खेती, गोपालन, नशामुक्ति	3
प्रेरक प्रसंग	मानव को जोड़िए, देश जुड़ेगा.	4
चिंतन	भोगवादी जीवन शैली से उभरते संकट	5
आवरण	राजभवन बना आचार्य का गुरुकुल.	6
संगठनम्	सेवा भारती के द्वारा कोटला गांव	11
गीता जयंती	कर्म करने की प्रेरणा देती है भगवद्गीता	12
देश-प्रदेश	गाय की महिमा	14
साक्षात्कार	मधुमेह मुक्त हो भारत	16
प्रस्ताव	जनसंख्या वृद्धि दर में असंतुलन	18
काव्य जगत	प्रहरी हम	20
संस्कृतम्	संस्कृतम वदाम.	21
कृषि	जैविक खादों के प्रयोग पर बल	22
पुण्य स्मरण	रामजन्मभूमि आंदोलन के पुरोधा	23
घूमती कलम	विश्व में बजेगा हिन्दी का डंका	24
पुण्यजंयती	महामना जी के कुछ संस्मरण	26
प्रतिक्रिया	सरकार की सोच अवैध कब्जों पर समुचित उपाय हो	27
देवभूमि	पैराग्लाईडिग सुपर फाइनल के लिए अजय कुमार.	29
विश्व दर्शन	लंदन ने की प्रथम भगवद्गीता सम्मेलन की मेजबानी	30
बाल जगत	सत्यनिष्ठ बालक – सत्यकाम	31

पाठकों के पत्र

सम्पादक महोदय,

मातृवन्दना का आश्विन-कार्तिक मास का अंक पढ़ा। इसमें सम्पादकीय लेख के अतिरिक्त, डॉ विद्याचंद ठाकुर व श्री नरेन्द्र शर्मा द्वारा ''कुल्लू का दशहरा'' विदा दशमी लेख पढ़ कर तो यूं लगा कि मानो हम कुल्लू दशहरे का सीधा प्रसारण ही देख व पढ़ रहे हैं। ऐतिहासिक जानकारी इतनी सटीक व रोचक ढंग से लिखी गई है कि मन में कोई प्रश्न नहीं रहता। सुना तो कई बार था कि कुल्लु का दशहरा होता है परन्तु क्यों होता है व क्या-क्या, कब-कब होता है तथा क्यों यह दशहरा मेला पूरे देश के दशहरा मनाने के बाद से शुरू होता है यह अब पता चला है। मातृवन्दना में मातृभूमि की सेवा का जो भाव उत्पन्न किया जाता है वह प्रशंसा के योग्य है। उम्मीद है आने वाले समय में भी हिंदू व हिन्दुत्व की जागृति के लिए आप व आपके समस्त कर्मचारी वर्ग नई-नई जानकारियों व अथक मेहनत से प्रयासरत रहेंगे।❖

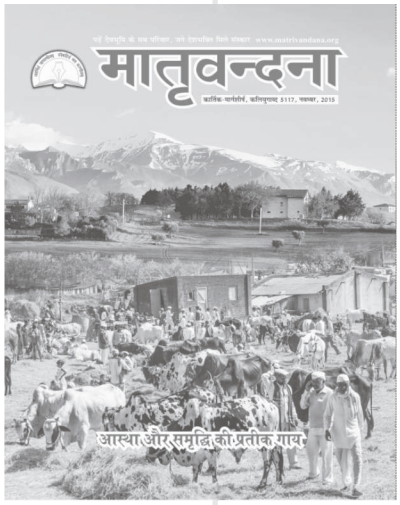

अशोक शर्मा, बड़ोह, कांगड़ा

व्यक्ति निंदा के चक्कर में देश निंदा

नवम्बर के प्रथम सप्ताह में पूर्व विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद और पूर्व मंत्री मणिशंकर अय्यर पाकिस्तान के दौरे पर थे। इन नेताओं द्वारा वहां से भारत सरकार के खिलाफ विष वमन देश की पीठ में छुरा घोंपने से कम नहीं है । भारत पाक वार्ता की विफलता के लिए मोदी सरकार की आलोचना, नवाज शरीफ- मुशर्रफ के कृत्यों की सराहना कर वे विश्व को क्या सन्देश देना चाहते हैं । कारगिल के घटनाक्रम को हम नहीं भूल सकते। उन असंख्य जवानों को कैसे भूलें जिन्होंने पाक के नापाक इरादों को विफल करने के लिए अपनी शहादत दी थी । सत्ता से बेदखली का अर्थ यह तो नहीं कि देश के दुश्मनों का गुणगान करें और उनसे भारत की सरकार को बदलने की अपील की जाए । देश-विदेश में जिस प्रकार का भारत विरोधी वातावरण निर्माण किया जा रहा है आने वाले समय में देश को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। स्वयं को देशभक्त और संवेदनशील कहने वाले लोग आज क्यों कान बन्द किए हैं । उनके लिए इन नेताओं की बातें सुनना जरूरी है जिससे वे इनकी बातों को सहिष्णु-असहिष्णु के तराजू पर तोल सकें। ऐसा लगता है कि कुछ लोगों को भारत को बदनाम कर, दोष किसी दूसरे के सर मढ़ने का जैसे विशेष अधिकार दे दिया गया हो । व्यक्ति निंदा के चक्कर में देश की निंदा वो भी पाकिस्तान में जाकर। नेताओं के ऐसे कृत्य दुर्भाग्यपूर्ण हैं। यह इनके दोगले व देशद्रोही चरित्र को दर्शाता है।❖

जोगिन्द्र ठाकुर, भल्याणी कुल्लू

पाठक सम्मेलन

प्रति वर्ष की भांति अपनी मातृवन्दना पत्रिका को स्तरोन्नत करने हेतु खण्ड अनुसार पाठक सम्मेलनों की योजना होती है। अतः इसी क्रम में इस माह खण्ड अनुसार पाठक सम्मेलनों की योजना बनी है। जिनकी तिथियां 25 व 27 दिसम्बर तय की गई हैं। अतः जिला या खण्ड प्रचार मातृवन्दना प्रमुख से पाठक सम्मेलन की जानकारी प्राप्त कर अपनी उपस्थिति सुनिश्चित कर सकते हैं। ❖

सभी पाठकों एवं विज्ञापनदाताओं को
मातृवन्दना संस्थान
की ओर से श्री गीता जयंती की शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (दिसम्बर)

श्रीकाल भैरव अष्टमी	3 दिसम्बर
एकादशी	7, 21 दिसम्बर
अमावस्या	11 दिसम्बर
श्रीगीता जयंती	21 दिसम्बर
वीर देवता पूजन पूर्णिमा	25 दिसम्बर
क्रिसमस	25 दिसम्बर
पन्द्रह पौष त्यौहार	30 दिसम्बर

जैविक खेती, गोपालन, नशामुक्ति एवं अस्पृश्यता उन्मूलन हेतु अनूठी पहल

व्यक्ति विशेष की सृजनात्मकता उसके व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करती है। रचनात्मक कार्यों के प्रति उसकी सकारात्मक सोच को जब भी उसे सुअवसर प्राप्त होता है तो वह स्वयं कृत रचनात्मक कार्यों के अनुभव के आधार पर सम्पूर्ण समाज को भी उस ओर प्रेरित करता है। सौभाग्यवश अपने प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत एक ऐंसी ही विभूति हैं जिन्होंने समाजिक उन्नति के लिए अनेक कार्य किये हैं। मौलिक चिन्तन कर शिक्षा, कृषि, गौ-संरक्षण नशामुक्त एवं अस्पृश्यता निवारण के माध्यम से समाज एक नई दिशा की ओर अग्रसर होगा। स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत कर अपने पद की गरिमा के अनुरूप हिमाचली समाज में सजगता लाने के लिए उत्सुक दिखाई देते हैं। हिमाचल प्रदेश की वास्तविक स्थिति का जायजा लेकर ही इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यहॉ सामाजिक सरोकार से जुड़े चार-पांच विषयों पर कार्य करने की आवश्यकता है। ये विषय हैं स्वच्छ-निर्मल हिमाचल, नशामुक्ति, जीरो बजट की जैविक खेती, अस्पृश्यता निवारण एवं पर्यटन। इन सभी विषयों पर प्राय: हिमाचल प्रदेश सरकारों द्वारा कई योजनाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है महामहिम राज्यपाल ने इन सभी विषयों के प्रति गहरी रूचि प्रदर्शित की है। विगत मास प्रदेश सरकार के प्रशासनिक अधिकारियों, विश्वविद्यालय के उपकुलपतियों, शिक्षा विभाग के निदेशक, पुलिस प्रमुख एवं स्वयंसेवी संगठनों के साथ संयुक्त बैठक कर उन्होंने उक्त विषयों पर गहन एवं विस्तृत चर्चा की है। संबधित अधिकारियों को उक्त बिन्दुओं पर गम्भीरता से समुचित उपाय करने के लिए बड़ी विनम्रता से निर्देश दिए हैं। शिक्षा विभाग एवं पुलिस विभाग को युवा शक्ति के प्रति विशेष ध्यान एवं सजगता रखने की प्रेरणा दी ताकि नशामुक्त समाज का निर्माण हो। कृषि-एवं बागवानी विश्वविद्यालयों को नई जैविक-कृषि क्रांति लाने हेतु प्रोत्साहित किया गया। स्वदेशी गायों की नस्ल सुधारने हेतु उन्होंने कार्य योजना प्रस्तुत की ।

वस्तुस्थिति यह है कि हमने विदेशों से आयातित ज्ञान-विज्ञान अथवा तकनीक को ही अधिमान दिया है। कृषि एवं पशु विज्ञान में भी हम इसी राह पर चल रहे हैं। जबकि हमारे अपने देशी बीज गेहूं, चावल आदि की न जाने कितनी ही किस्में यहां उपलब्ध हैं। हमारे ही बीजों को सुधार कर अमेरिका तथा अन्य यूरोपीय देश पेटेन्ट कर लेते हैं, इससे बड़ी चिंताजनक बात और क्या हो सकती है। वही हाल गाय की नस्लों का है। विदेशी नस्ल की गायों के प्रजनन-टीके यहां सर्वत्र उपलब्ध हैं लेकिन उत्तम किस्म की देशी गायों के नहीं। वहीं दूसरी ओर हिमाचल में अब तक गांवो में समाजिक समरसता का अभाव है। अस्पृश्यता का समाज ऐसा ताना-बाना बुना है जिसमें मकड़ी के समान उलझे हुए हैं। दूसरी ओर हिमाचल प्रदेश की आवो-हवा के सब कायल हैं। स्वच्छ प्रदेश का निर्माण कर हमें पर्यटन को बढ़ावा देना है। ये सभी विषय जिन पर महामहिम राज्यपाल ने तवज्जो देने की बात कही है। सचमुच में उनके गहन दृष्टिकोण, कर्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी हिमाचल प्रदेश की सेवाभावना का परिचायक है।

बड़ों का बचपन

विद्यार्थियों को उनके गणित के अध्यापक ने घर से हल करके लाने के लिए कुछ प्रश्न दिए। एक लड़के ने अन्य सारे प्रश्न तो सही-सही कर लिए, केवल एक प्रश्न को हल करने में उसे एक मित्र की सहायता लेनी पड़ी। अगले दिन कक्षा में इसी विद्यार्थी के सब उत्तर सही देखकर अध्यापक ने बड़ी प्रशंसा की और अपनी लेखनी पुरस्कार में देने लगे। किन्तु यह क्या! वह विद्यार्थी फूट-फूट कर रोने लगा- ''गुरूजी, इनमें से एक प्रश्न मैंने अपने मित्र की सहायता से हल किया है। मैंने सारे प्रश्न कहां हल किए हैं?मैंने तो आपको धोखा दे दिया। मुझे पुरस्कार नहीं दण्ड मिलना चाहिए।'' अध्यापक महोदय उस बालक की सच्चाई से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा- ''अब यह पुरस्कार मैं तुम्हें तुम्हारी सत्यवादिता के लिए देता हूं।''

यही बालक आगे चलकर गांधीजी के राजनीतिक गुरू गोपालकृष्ण गोखले के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। ❖

मानव को जोड़िए, देश जुड़ेगा

एक दिन विनोबा जी के पास कॉलेज के कुछ छात्र आए। विनोबाजी ने उन्हें एक कागज के टुकड़े करके देते हुए कहा- ''इन टुकड़ों से भारत का नक्शा बनाना है।'' विद्यार्थी बहुत देर तक सिर खपाने के बाद भी उन टुकड़ों को जोड़कर नक्शा नहीं बना सके। पास ही एक नौजवान युवक बैठा यह सब देख रहा था। कुछ साहस करके विनोबा जी से उसने कहा- ''आप यदि आज्ञा दें, तो मैं इन टुकड़ों को जोड़ दूं।''

विनोबाजी की आज्ञा पाकर कुछ ही देर में उस युवक ने वे टुकड़े जोड़कर भारत का नक्शा बना दिया। विनोबाजी ने उससे पूछा- ''तुमने इतनी शीघ्रता से इन टुकड़ों को कैसे जोड़ दिया?'' युवक ने कहा- ''इन टुकड़ों में एक ओर भारत का नक्शा है तथा दूसरी ओर मनुष्य का। मैंने मानव को जोड़ा, भारत अपने आप बन गया।''

यह सुनकर विनोबाजी बोले- ''ठीक है, यदि हमें देश को जोड़ना है तो पहले मनुष्य को जोड़ना पड़ेगा। मनुष्य जुड़ेगा तो देश अपने आप जुड़ जाएगा।❖

अढ़ाई लाख मिले, पर नहीं डोला ईमान

कौन कहता है कि समाज में ईमानदारी समाप्त हो गई है। जिला सिरमौर के मुख्यालय नाहन में अभी भी ईमानदारी जिंदा है। इसकी मिसाल नाहन के वाल्मीकि नगर

की एक महिला रमा देवी ने पेश की है। जानकारी के अनुसार बुधवार को सड़क पर पड़े अढ़ाई लाख रूपए देखकर भी रमा देवी की नीयत नहीं बदली तथा उसने संबंधित राशि मालिक को लौटा दी। हुआ यूं कि रमा देवी पत्नी हरि दर्शन, जो नाहन नगर परिषद की सफाई कर्मी है, अपनी ड्यूटी के तहत शहर के माल रोड पर पुरानी गैस एजेंसी के समीप काम कर रही थी। इस दौरान उसे सड़क पर गिरी नोटों की एक बड़ी गड्डी नजर आई। उसने पैसों की इस गड्डी को उठाया तथा आसपास के लोगों से इस बारे जिक्र किया। इस बीच पता चला कि यह पैसे साथ के एक व्यापारी पिंडी ट्रेडर के थे। महिला ने यह राशि ईमानदारी से मालिक को लौटा दी। लोगों ने रमा देवी को इस ईमानदारी के लिए जिला प्रशासन से सम्मानित करने की मांग की है। ❖

भोगवादी जीवन शैली से उभरते संकट

– मोतीलाल गौतम

यावद् भ्रियेज्जहरं, तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽमिमन्येत सः स्तेनो दण्डमर्हति॥

अर्थात् जितने से पेट भर जाए, उतना ही जीवों का अपना है। जो इससे अधिक को अपना मानकर अभिमान करता है, वह 'चोर' है, दण्ड पाने योग्य है।

हमारी हिन्दू संस्कृति सनातन् है अर्थात् शाश्वत है। यह चिर पुरातन होते हुए भी नित्य नूतन है। अपनी संस्कृति के इस अनोखे सामर्थय के अनेकों कारण विद्यमान हैं परन्तु वर्तमान काल में आधुनिकीकरण के नाम पर भोगवाद के पीछे अन्धा होकर भाग रहे संसार ने हमारे सामने अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा कर दी हैं, जिससे हमारा समाज भी अछूता नहीं रह पाया है। यदि समय रहते इन समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो हमारी समृद्ध व प्राचीन संस्कृति की कल्पना मात्र हमारे ग्रंथों व व्याख्यानों में ही रह जाएगी। हमारे समाज पर भोगवादी जीवनशैली का सबसे अधिक असर हमारी कुटुम्ब व्यवस्था पर पड़ा है व इस जीवन शैली के लिए हमारी आज की शिक्षा प्रणाली जिम्मेवार है। यह पूर्णत: विधर्मी है व श्रद्धा का निर्माण करने की अपेक्षा उसका नाश करने का प्रयत्न करती है जिसके कारण अधिकांश पढ़े-लिखे व्यक्ति दुर्योधन जैसी वृत्ति के बन रहे हैं। ''जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति: जानामि अधर्मं न च में निवृत्ति'' अर्थात् वे धर्म क्या है यह मालूम है परन्तु उसका पालन नहीं कर सकते, अधर्म क्या है यह भी मालूम है परन्तु उसे छोड़ नहीं सकते।

भारतीय परिवार प्रणाली इतिहास की कहानी बनती जा रही है। संयुक्त परिवार व्यवस्था अब गिने-चुने उदाहरणों तक सीमित होकर रह गई है। वर्तमान बदलते हुए परिवेश में गिरते हुए जीवन मूल्यों पर दृष्टि डालें तो हम विज्ञान और तकनीक की गगन चुम्बी ऊंचाईयों के बीच 21वीं सदी के रूप में प्रवेश कर चुके हैं और इस चरम भौतिक विकास ने हमारे सांस्कृतिक व सामाजिक जीवन को विकारमंत्र बना दिया है। परिवार प्रणाली हमारे सांस्कृतिक व सामाजिक जीवन की आधारशिला रही है परन्तु पश्चिमी सोच व भौतिकवादी जीवन शैली ने परिवार को पति-पत्नी एवं सन्तानों तक ही सीमित कर दिया है। एकल परिवारों में भी दरारें उभर रही हैं लोग व्यक्तिनिष्ठ होकर एकांगी बनते जा रहे हैं और इस व्यवस्था से सबसे त्रस्त एवं उपेक्षित हमारे वयोवृद्ध जन होते जा रहे हैं।

भारतीय परिवार प्रणाली इतिहास की कहानी बनती जा रही है संयुक्त परिवार व्यवस्था अब गिने-चुने उदाहरणों तक सीमित होकर रह गई है। वर्तमान बदलते हुए परिवेश में गिरते हुए जीवन मूल्यों पर दृष्टि डाले तो हम विज्ञान और तकनीक की गगन चुम्बी ऊंचाईयों के बीच 21वीं सदी के रूप में प्रवेश कर चुके हैं और इस चरम भौतिक विकास ने हमारे सांस्कृतिक व सामाजिक जीवन को विकारमंत्र बना दिया है। परिवार प्रणाली हमारे सांस्कृतिक व सामाजिक जीवन की आधारशीला रही है परन्तु पश्चिमी सोच व भौतिकवादी जीवन शैली ने परिवार को पति-पत्नी एवं सन्तानों तक ही सीमित कर दिया है। एकल परिवारों में भी दरारें उभर रही हैं लोग व्यक्तिनिष्ठ होकर एकांगी बनते जा रहे हैं और इस व्यवस्था से सबसे त्रस्त एवं उपेक्षित हमारे वयोवृद्धजन हाते जा रहे हैं।

जैसे-जैसे भोगवादी जीवनशैली का प्रचलन बढ़ता जो रहा है वैसे-वैसे वृद्धजनों को उपेक्षा का शिकार होकर अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करते हुए एकाकी जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ रहा है। नगरों की ओर पलायन करती युवा पीढ़ी के संयुक्त परिवार में घुटन होने लगी है, वे अपने बुजुर्गों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। उच्च स्तरीय भौतिकवादी जीवन जीने हेतु वर्तमान पीढ़ी के लिए धन का महत्व बढ़ता जा रहा है। वह धन कमाने में इतनी व्यस्त हो चुकी है कि उसके पास परिवार के बड़े-बुजुर्गों हेतु समय का अभाव होता जा रहा है। वे माता-पिता को तभी अपनाते हैं जब उनके पास धन होता है। धन समाप्त हो जाने पर वे उन्हें बोझ समझते हैं। अत: इस जीवन शैली ने व्यक्ति को स्वार्थी बना दिया है वह अपना स्वार्थ देखकर ही कार्य करता है। उनके अंदर बुजुर्गों के प्रति सेवा, दया, आदर व त्याग का भाव कम होता जा रहा है, क्योंकि वे वृद्धों की सेवा व सीख को अपनी निजी स्वतंत्रता में बाधक मानते हैं जिसके कारण वृद्धजन अनदेखी का शिकार होकर वृद्धाश्रमों का सहारा लेने को विवश हैं।❖

राजभवन बना आचार्य का गुरूकुल

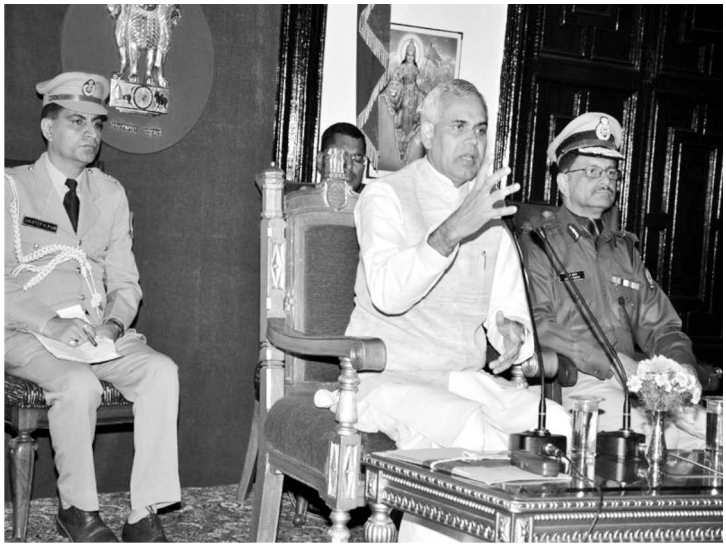

राजभवन का बदला परिवेश एवं वातावरण पहले से भिन्न कहानी कह रहा है। हिमाचल राजभवन का यह ऐतिहासिक मौका तब हो गया जब राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने प्रदेश के तमाम अफसरों के साथ मंथन शुरू किया कि कैसे देवभूमि में नशे से मुक्ति हो और गौधन का बेहतरीन प्रयोग किया जाए। कैसे प्रदेश की आबोहवा साफ हो और भूमि में रसायन के जहर से मुक्त अन्न लोगों को मिले? हिमाचल राजभवन के मुख्य हॉल में करीब छह घंटे चली बैठक की शुरूआत मंत्रोचारण के साथ हुई और राज्यपाल आचार्य देवव्रत की कुर्सी के ठीक पीछे भारत मां की तस्वीर, के साथ बगल में राज्य के पुलिस मुखिया थे। स्वयंसेवी संगठनों के कुछ लोगों के बीच विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों के साथ ही राज्य की नौकरशाह टीम के चंद गिने चुने लोगों के साथ कहीं नमीं तो कहीं तल्ख तेवर भी राज्यपाल के थे। मुद्दा बिलकुल स्पष्ट था। केवल चार विषयों पर शासन की जवाबदेही सुनिश्चित करना। पहला नशे को रोकना, दूसरा जैविक खेती, तीसरा स्वच्छता और अंतिम पर्यटन का विकास। राज्यपाल, सभी विषयों पर इसलिए पहल की ताकि राज्य को कुछ बुराइयों से बचाया जा सके। इसका प्रारूप तब तय किया गया जब देवव्रत ने स्वयं प्रदेश में जा-जाकर विषयों का अंदरूनी जायजा लिया। हालांकि बैठक में सरकार के शीर्षस्थ अफसर (सचिव स्तर) कम ही थे लेकिन जिला प्रशासन व विभागों के अध्यक्षों की मीडिया की मौजूदगी में जिस तरह जवाबदेही तय की गई वह राजभवन के इतिहास में पहली बार था कि सरकार ने समानांतर किसी मुद्दे को सख्ती से उठाने हेतु पहल की गई थी। संभवत: इस माहौल के लिए कम से कम अफसरशाही तो तैयार नहीं थी। जब किसान अपनी बात रख रहे थे कि क्यों प्रतिबंधित रसायनिक खाद के बारे में विभाग बताता नहीं है?क्यों रामपुर से किंगल तक खुलेआम ढाबों पर अफीम बिकती है? क्यों ड्रग बनाने वाली कंपनियों पर छापेमारी नहीं होती?क्यों भारतीय केंचुआ खाद प्रयोग नहीं होती? क्यों कृषि विवि के वैज्ञानिकों में तालमेल नहीं? इन तमाम सवालों पर स्वयंसेवी संगठनों ने अपनी बात राजभवन के फोरम पर बेबाकी से रखी। शिक्षा विभाग निदेशकों पर शिक्षा व्यवस्था में बच्चों के प्रति संजीदगी प्रदर्शित न किए जाने पर सवाल उठे।

राजभवन में सरकारी अधिकारियों व विश्वविद्यालय के कुलपतियों के साथ आयोजित बैठक में उन्होंने कहा कि प्रदेश में 100 टन चरस व 20 टन अफीम का कारोबार होने की बात सामने आना गंभीर विषय है। उन्होंने बद्दी में इस कारोबार के तार जुड़े होने का पता लगाने की सलाह दी। उन्होंने पुलिस, वन और राजस्व विभाग को नशे की खेती वाले स्थानों को चिन्हित कर सामूहिक प्रसार करने को कहा।

युद्ध से अधिक विनाशकारी नशे का कारोबार

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि नशे का कारोबार युद्ध से अधिक विनाशकारी है। उन्होंने कहा कि पड़ोसी राज्य पंजाब में इसके गंभीर परिणाम सामने आ चुके हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए वह शिक्षकों के साथ बैठक करेंगे। उन्होंने स्टेट ड्रग कंट्रोलर को गंभीरता से काम करने

की नसीहत दी। राजभवन में सरकारी अधिकारियों व विश्वविद्यालय के कुलपतियों के साथ आयोजित बैठक में उन्होंने कहा कि प्रदेश में 100 टन चरस व 20 टन अफीम का कारोबार होने की बात सामने आना गंभीर विषय है। उन्होंने बद्दी में इस कारोबार के तार जुड़े होने का पता लगाने की सलाह दी। उन्होंने पुलिस, वन और राजस्व विभाग को नशे की खेती वाले स्थानों को चिन्हित कर सामूहिक प्रसार करने को कहा।

गौ रक्षा में जुटा हिमाचल का एक विश्वविद्यालय

फल-सब्जियों पर शोध करने वाले हिमाचल प्रदेश

के डॉ. वाईएस परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय ने गौ रक्षा का अनोखा प्रयोग किया है। सोलन के नौणी स्थित यह विश्वविद्यालय सड़कों से बेसहारा व लावारिस गायों को लाकर उन्हें पाल रहा है। इससे जहां इन गायों को आसरा मिल रहा है, वहीं इनके गोबर और गौमूत्र से कीटनाशकों के विकल्प बनाने की भी तैयारी है। इनका प्रयोग विवि का हर विभाग फल और सब्जियों पर करेगा। विवि के कुलाधिपति व राज्यपाल आचार्य देवव्रत के दिशा निर्देश पर चलाया जा रहे इस अभियान से जैविक और प्राकृतिक खेती की दिशा में यह प्रदेश में नई पहल होगी। विश्वविद्यालय के स्टाफ ने सड़कों पर लावारिस घूम रहीं देसी नस्लों की 43 गाय एकत्र की हैं। विश्वविद्यालय का प्रत्येक विभाग तीन से चार गाय अपने परिसर में खूंटों पर बांध चुका है। यहां कुल 12 विभाग हैं। सड़कों से बेसहारा गायों को ढूंढने का सिलसिला जारी है। विश्वविद्यालय ने यहां पर सौ से अधिक गायों को बांधने की तैयारी की है। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने हाल ही में जैविक खेती कार्यक्रम में गौ रक्षा, गौमूत्र और गोबर से जैविक और प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया था। इस कार्यक्रम में देश भर से वैज्ञानिक यहां पहुंचे थे। देसी गाय के गौमूत्र और गोबर से तैयार होने वाले बीजामृत, जीवामृत जैसे उत्पादों की जानकारी देने के लिए विश्वविद्यालय प्रदेश भर में करीब 5000 पोस्टर लगाए जाएंगे।

डॉ. वाईएस परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय ने गौ रक्षा का अनोखा प्रयोग किया है। सोलन के नौणी स्थित यह विश्वविद्यालय सड़कों से बेसहारा व लावारिस गायों को लाकर उन्हें पाल रहा है। इससे जहां इन गायों को आसरा मिल रहा है, वहीं इनके गोबर और गौमूत्र से कीटनाशकों के विकल्प बनाने की भी तैयारी है। इनका प्रयोग विवि का हर विभाग फल और सब्जियों पर करेगा।

शून्य बजट पर हो जैविक खेती

राज्यपाल ने राज्य के किसानों के कल्याण के लिए शून्य बजट पर जैविक खेती करने का फार्मूला सुझाया, साथ ही किसान-बागवानों के लिए चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के लिए मिलकर काम न करने पर कृषि एवं बागवानी विभागों को लताड़ लगाई। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ लोग दवा विक्रेताओं से मिलकर अपने स्वार्थ को साथ रहे हैं। उन्होंने किसानों को शिक्षित करने के लिए कृषि और बागवानी विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों को जागरूकता शिविरों का आयोजन करने को कहा। उन्होंने कहा कि जैविक भोजन स्वास्थ्यप्रद एवं पौष्टिक होता है। उन्होंने कहा कि राज्य में जैविक खेती को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने पशुपालन विशेषकर देसी नस्ल की गऊएं जिनका दूध विशेषज्ञों द्वारा किए गए अनुसंधानों में गुणवत्तायुक्त पाया गया है, पालने पर बल दिया। ❖

महामहिम के एजेंडे में चार बिंदु

- प्राकृतिक खेती-गोपालन
- अस्पृश्यता एक सामाजिक बुराई
- युवाओं को नशे से मुक्त करना
- पर्यटन, पर्यावरण एवं स्वच्छता

पहली बार राजभवन में ऐसा प्रयोग हुआ है, जिससे प्रदेश के लोगों का भला हो सकेगा। भले ही राज्यपाल का संवैधानिक पद चार दीवारों के भीतर बैठने वाले व्यक्ति की छवि के रूप में जुड़ा हुआ है। लेकिन राज्यपाल ने इस स्थापित परंपरा को किनारे रख दिया है। राज्यपाल के चार सूत्रीय एजेंडा पर राजभवर के सभागार में सरकारी महकमों के अधिकारी भी बेधड़क होकर बोले। पांच घंटे तक चली बैठक के बाद प्रदेश सरकार के समस्त अधिकारियों को समस्याओं के समाधान के साथ ही राजभवन की दहलीज लांघनी होगी। नशे की गिरफ्त में आ चुके प्रदेश के युवाओं को इस बुराई से बाहर निकालने के साथ-साथ देवभूमि में प्राकृतिक खेती व गोपालन को बढ़ाया जाए। पर्यटन-पर्यावरण एवं स्वच्छता व समाज से जातिगत छुआछूत प्रथा को खत्म करने की जरूरत है। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने विनयपूर्वक आग्रह किया कि यह कार्य मैं प्रदेश के परिवार का हिस्सा होने के नाते कर रहा हूं, राज्यपाल पद के तौर पर नहीं। चर्चा के लिए चारों बिंदुओं का किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं होना चाहिए। सत्ता व विपक्ष को कोई संशय नहीं होना चाहिए। बैठक में ये सामने आया कि सरकारी विभागों में आपसी तालमेल की कमी होने के कारण योजनाओं का लाभ लोगों तक नहीं पहुंच रहा है। इसलिए सभी सरकारी विभागों में तालमेल होना चाहिए। बैठक में प्रदेश पुलिस प्रमुख के अलावा प्रदेश सरकार में अतिरिक्त मुख्य सचिव पशुपालन, अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि, अतिरिक्त मुख्य सचिव शहरी विकास विभाग के अलावा अधिकांश विभागों के अधिकारी मौजूद थे। तीनों विश्वविद्यालयों के कुलपतियों में बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति व प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति शामिल हुए इस बैठक में सरकारी अधिकारियों के अलावा गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों व मीडिया के लोगों ने भी भाग लिया।

नशा मुक्ति के लिए एक कदम: स्वयं राज्यपाल 30 नवंबर को प्रदेश के सबसे बड़े औद्योगिक क्षेत्र बद्दी जा रहे हैं। जहां पर बड़े पैमाने पर नशे के कैप्सूल का उत्पादन हो रहा है। जिसे रोकने के लिए अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। उनका कथन है कि किन्हीं दो देशों के बीच में युद्ध से भी अधिक घातक है नशाखोरी। प्रदेश के जिन इलाकों में भांग व पोस्त की खेती होती है, ऐसे लोगों के लिए परिवार चलाने के लिए साधन भी तलाशने होंगे।

खेती के लिए जीरो बजट: गाय ही खेती का मूल आधार है। हमेशा ही गाय हमारी आर्थिकी की रीढ़ रही है। आस्ट्रेलिया व स्विट्जरलैंड में किए गए शोध में सामने आया है कि भारत की देशी गाय का दूध गुणवत्ता के आधार पर सबसे उत्तम है। हमारे यहां की गाय के दूध में ए-टू की गुणवत्ता पाई जाती है। यदि गाय पाली जाएगी तो खेती भी बढ़ेगी। जिसके चलते बेसहारा हो रही गो माता की समस्या का समाधान भी निकल जाएगा।

खेती के लिए जीरो बजट: गाय ही खेती का मूल आधार है। हमेशा ही गाय हमारी आर्थिकी की रीढ़ रही है। आस्ट्रेलिया व स्विट्जरलैंड में किए गए शोध में सामने आया है कि भारत की देशी गाय का दूध गुणवत्ता के आधार पर सबसे उत्तम है। हमारे यहां की गाय के दूध में ए-टू की गुणवत्ता पाई जाती है। यदि गाय पाली जाएगी तो खेती भी बढ़ेगी। जिसके चलते आवारा हो रही गो माता की समस्या का समाधान भी निकल जाएगा।

पर्यटन के लिए पंचायतें: प्रदेश के लिए सबसे बड़ा रोजगार का साधन नजर आता है तो वह पर्यटन है। यदि पंचायतों को इसके लिए साथ जोड़ा जाए तो परिणाम अच्छे आएंगे। पर्यटन लोगों के लिए ऐसा साधन है कि इसके सहारे कुछ भी हासिल किया जा सकता है। दूसरे विभागों के सहयोग से पर्यटन विस्तार किया जा सकता है।❖ **साभार: दैनिक जागरण**

जातिगत छुआछूत की समस्या को करेंगे समाप्त - आचार्य देवव्रत

प्रदेश में जातिगत छुआछूत की बढ़ती समस्या को खत्म करने का राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने संकल्प लिया है। इसके लिए वह सबसे पहले प्रदेश के सभी मंदिरों के पुजारियों से मिलकर जातिगत छुआछूत खत्म करने का आग्रह करेंगे। उनका कहना है कि आधुनिक युग में जातिगत छुआछूत के लिए कोई जगह नहीं है। वर्ण तथा कर्म पर आधारित थीं जन्म से जाति का कोई लेना-देना नहीं रहा है। मनु ऋषि ने जाति का कहीं भी जन्म से उल्लेख नहीं किया है। जातिगत छुआछूत परंपरा मध्यकाल के बाद पैदा हुई है। उन्होंने हैरानी जताई कि प्रदेश के सरकारी स्कूलों में मिलने वाले मिड-डे-मील के दौरान बच्चों की अलग-अलग लाइनें लगाई जाती हैं। इससे बच्चों के मानस पटल पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस समस्या से आसानी से छुटकारा पाया जा सकता है। इसके तहत पूरे प्रदेश में शिक्षा विभाग को जनजागृत अभियान शुरू करना होगा। हर स्कूल के प्रिंसिपल व हेडमास्टर को इस संबंध में अवगत करवाना होगा कि जातिगत छुआछूत कुछ नहीं होती है। कभी अस्पताल में देखा है किय डॉक्टर बीमार लोगों का इलाज करते हुए जाति को देखते हुए दवाई देता है या इंजेक्शन लगाता है। राज्यपाल ने कहा कि वह लोगों के घरों में जाएंगे। उनके बीच बैठकर उनसे मिलेंगे। मूर्ति को आकार आदमी देता है। उसके बाद उसी आदमी को उस मूर्ति की पूजा करने से रोका जाता है, यह कैसा भेदभाव है। इसे दूर करने की जरूरत है।❖ **साभार: दैनिक जागरण**

जैविक खेती

संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान के चक्र को (इकालाजी सिस्टम) प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान का चक्र निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ-साथ गौ पालन किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रंथों में प्रभु कृष्ण और बलराम हैं जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से संबोधित करते हैं अर्थात कृषि एवं गोपालन संयुक्त रूप से अत्यधिक लाभदायी था, जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में गोपालन धीरे-धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह-तरह की रासायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

जैविक कृषि से उत्पादित सब्जियाँ

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रांति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है अधिक उत्पादन के लिये खेती में अधिक मात्र में रासायनिक उर्वरको एवं कीटनाशक का उपयोग करना पड़ता है जिससे सीमान्य व छोटे कृषक के पास कम जोत में अत्यधिक लागत लग रही है और जल, भूमि, वायु और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है साथ ही खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे हैं। इसलिए इस प्रकार की उपरोक्त सभी समस्याओं से निपटने के लिये गत वर्षों से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिद्धान्त पर खेती करने की सिफारिश की गई, जिसे प्रदेश के कृषि विभाग ने इस विशेष प्रकार की खेती को अपनाने के लिए, बढ़ावा दिया जिसे हम जैविक खेती के नाम से जानते है। भारत सरकार भी इस खेती को अपनाने के लिए प्रचार-प्रसार कर रही है।❖

सराहां के गौ-रक्षकों की रिहाई के लिए देश व्यापी आंदोलन का ऐलान

विश्व हिन्दू परिषद ने गौ- संवर्धन व गौ-रक्षकों के लिए देश की आजादी के बाद हिमाचल प्रदेश में पहली महापंचायत का आयोजन किया, जिसमें 125 गौ-शालाओं व अनेक धार्मिक सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता महापंचायत में सम्मिलित हुए। महापंचायत में सराहां की आठ न्याय पंचायतों के प्रधान, वी.डी.सी. मेम्बर तथा स्थानीय विधायक व सभी राजनीतिक दलों के लोगों को आमंन्त्रित किया था।

सराहां में गौ-रक्षकों की सम्मान सहित रिहाई के लिए विहिप ने बडा ऐलान किया है। विहिप ने साफ कर दिया है कि यदि गौ-रक्षकों को बहाल नहीं किया गया तो देशव्यापी आंदोलन होगा। विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त महामन्त्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने सराहां में आयोजित महापंचायत में यह ऐलान कर जहां जेल में बंद सराहां क्षेत्र के गौ-रक्षकों का सम्मान बढाया वहीं इसी बहाने उन्होंने व्यवस्था को भी ललकारा। डॉ. जैन ने कहा कि हिमाचल प्रदेश को अयोध्या मत बनाओ। उन्होंने कहा कि हिमाचल को किसी भी कीमत पर गौ-तस्करों का हाईवे नहीं बनने दिया जाएगा।

डॉ0 सुरेन्द्र जैन ने सराहां के कुश्ती स्टेडियम में आयोजित हिन्दु महापंचायत में बतौर मुख्यवक्ता शिरकत की। यहां डा0 जैन ने प्रदेश में पुलिस व्यवस्था की बखियां उधेड़ते हुए कहा कि गौ-तस्करों को पकड़ने पर जो पुलिस गो रक्षकों की पीठ थपथपा रही थी वही उन्हें सम्मान देने के स्थान पर तस्कर की मौत के आरोप में उन्हें जेल में डाल देती है। जबकि पशु तस्कर पुलिस हिरासत में मरा है। इस सारे मामले में पुलिस अपनी नाकामी को छुपाने के लिए सारा दोष गौ-रक्षकों के सिर मढ़ रही है। उन्होंने कहा कि पुलिस की मनमानी किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। गौ-रक्षकों को सम्मान सहित रिहा नहीं किया तो जेल भरो आंदोलन होगा। उन्होंने यहां व्यवस्था को चेतावनी देते हुए कहा कि शांत प्रदेश हिमाचल प्रदेश से गौ-तस्करी किसी कीमत पर नहीं होने दी जाएगी, इसके लिए चाहे कोई भी बलिदान क्यों न देना पड़े। उन्होंने कहा कि गौ-तस्करी से सबसे शांत प्रदेश हिमाचल में उबाल है तो समूचे देश में क्या हाल होगा।❖

पंचगव्य उत्पाद बिक्री केन्द्र का उद्घाटन

विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया ने 2 अक्तूबर को पूर्वी दिल्ली में पंचगव्य उत्पाद बिक्री केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. तोगड़िया ने कहा कि गाय और गौ उत्पाद सुखी, समृद्ध, स्वस्थ और शतायु जीवन का मुख्य आधार है। भारत की अर्थव्यवस्था, धर्म, अध्यात्म और शारीरिक उन्नति में गौ माता का विशेष महत्व है। उन्होंने यह भी कहा कि सनातन धर्म एक वैज्ञानिक जीवनशैली है और इसके आधार गाय के संवर्धन हेतु यह आवश्यक है कि जो लोग प्रत्यक्ष गाय नहीं पाल सकते उन्हें कम से कम अपने घरों में रोजमर्रा की जिन्दगी में काम आने वाले देशी गाय के दूध, घी, मूत्र व गोबर से निर्मित विभिन्न प्रकार के गौ उत्पादों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। इसके अलावा प्रत्येक हिन्दू को, जो गाय को नित्य प्रति रोटी खिलाने में असमर्थ हों, रोटी की कीमत प्रतिदिन के हिसाब से निकाल कर गौशाला अवश्य पहुंचानी चाहिए। इस अवसर पर अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित थे।❖ **साभार: पाञ्चजन्य**

इस अंक के उत्तर-
1. एन.एच.-22, 2. कोटला-कुल्लू, 3. नितीश कुमार, 4. चैत्र, 5. ऋषि दधीचि, 6. 16, 7. 1.84 हजार कि.मी., 8. जी-सेट 15, 9. सैयद अकबरूद्दीन, 10. पेरिस।

सेवा भारती के द्वारा कोटला गांव में प्रभावित परिवारों में वितरित की गई राहत सामग्री-

16 नवम्बर 2015 सायंकाल का वह समय कुल्लू के ऐतिहासिक कोटला गांव के निवासियों के लिए एक दिवास्वप्न की भांति ही था जब अपनी मेहनत की कमाई से बनाये गये लकड़ी आशियानों को अपने सम्मुख जलकर राख होते हुए उन्होंने देखा। गौरतलब है कि पास में घास के ढ़ेर से चिंगारी के रूप में फैली आग ने देखते ही देखते दावानल का रूप धारण कर लिया और थोड़े ही समय में आग लकड़ी से बने घरों तक फैल गई। पहाड़ी क्षेत्रों में घर लकड़ी के तथा एक दूसरे से सटे हुए होते हैं। कोटला गांव में सामान्य रूप से जल की कमी है और सदैव किल्लत ही बनी रहती है। पीने के पानी की व्यवस्था भी दूर से चलकर लाना पड़ता है इसलिए बिन पानी आग बुझाने के सारे प्रयास व्यर्थ साबित हुए। समय मिलते ही सभी घर वालों ने घर के भीतर की वस्तुओं, सामग्री व कपड़ों को बाहर निकालना प्रारम्भ किया व मवेशियों को खोलना प्रारम्भ कर दिया। जिससे कुछ सामान व कुछ मवेशी बच पाये लेकिन आपाधापी के इस मंजर के बीच कुछ मवेशी अन्दर ही बंधे रह गये और देखते ही देखते सब स्वाहा हो गया। जानकारी मिलते ही आसपास के गांवों के लोग, प्रशासन अमला भी मौके पर पहुंचे लेकिन आग को काबू करने में प्रत्येक असफल ही रहा। कोटला गांव में 75 लकड़ी के मकान अग्नि की भेंट चढ़े। स्वयंसेवी संस्थाओं की ओर से भी प्रभावित परिवार हेतु सहायता की मुहिम चलाई गई। सर्वप्रथम गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी कल्लू की ओर से खाद्य सामग्री का प्रबन्ध किया गया, पश्चात् सेवा भारती कुल्लू के सौजन्य से कार्यकत्ताओं के द्वारा प्रत्येक प्रभावित परिवार को प्राथमिक उपयोग की वस्तुएं जैंसे टैन्ट, तिरपाल, कम्बल, रजाई-गद्दे, खाना बनाने के बर्तन, पहनने के कपड़े, इत्यादि नि:शुल्क वितरित किये गये।

स्थानीय प्रशासन द्वारा फौरी राहत के तौर पर प्रारम्भिक सहायता के लिए प्रत्येक बेघर परिवार को टैन्ट, खाने-पीने का सामान एवं सहायता राशि दी गई।❖

रिकांगपिओ में आयोजित की गई बाल मैराथन

हिमगिरी कल्याण आश्रम तथा क्रीड़ा भारती द्वारा 20 व 21 नवम्बर को किन्नौर के जिला मुख्यालय रिकांगपिओ में बालक व बालिकाओं के शारारिक विकास हेतु एक मिनी मैराथन का आयोजन किया गया।

इस मैराथन में जिले के दूरदराज के क्षेत्रों से विद्यार्थियों में खासा उत्साह देखने में आया। देश की भावी पीढ़ी को कर्तव्य बोध एवं जिम्मेदारी का एहसास कराने हेतु इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन निश्चित सफलता को प्राप्त होगा। कार्यक्रम में सहायक आयुक्त किन्नौर, पंकज शर्मा ने झंडी दिखाकर मैराथन को प्रारम्भ किया।

कार्यक्रम में रानी लक्ष्मीबाई छात्रावास की कुमारी सनम जंगमों ने प्रथम स्थान जबकि कोठी की निशा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार 7 कि.मी. की दूसरी मैराथन में रानीलक्ष्मीबाई छात्रावास की ही कुमारी दिशा, नेहा, अदिति और अंगमों ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में उपमंडलाधिकारी कल्पा मेजर (डॉ.) विशाल शर्मा, पूर्व विधायक तेजवंत सिंह नेगी, कार्यक्रम के संयोजक विद्याबंधु, हिमगिरि कल्याण आश्रम किन्नौर प्रभारी श्री भगवान सहित क्षेत्र के सैकड़ों नागरिक उपस्थित रहे।❖

कर्म करने की प्रेरणा देती है भगवद्गीता

(21 दिसंबर गीता जयन्ती पर विशेष)

– श्री जे. नंद कुमार, अ.भा.प्रचार प्रमुख

'जब शंकाएं मुझ पर हावी होती हैं, और निराशाएं मुझे घूरती हैं, जब दिगंत में कोई आशा की किरण मुझे नजर नहीं आती, तब मैं गीता की ओर देखता हूं'– महात्मा गांधी संसार का सबसे पुराना दर्शन ग्रन्थ है भगवद्गीत्। साथ ही साथ विवेक, ज्ञान एवं प्रबोधन के क्षेत्र में गीता का स्थान सबसे आगे है। यह केवल एक धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं, अपितु एक महानतम प्रयोग शास्त्र भी है। केवल पूजा घर में रखकर श्रद्धाभाव से आराधना करने का नहीं अपितु हाथ में लेकर युद्धभूमि में संघर्षकर जीत हासिल करने का सहायक ग्रन्थ है। महाभारत के युद्ध के प्रारम्भ में कर्म मूढ होकर युद्ध से निवृत्त होने की इच्छा व्यक्त करने वाले अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीतोपदेश के द्वारा ही कर्म पूर्ण करने की प्रेरणा दी। अर्जुन ऐसा कहते हैं कि, 'युद्ध करने से भी अच्छा अर्थात् निहित कर्म करने से भी श्रेष्ठ युद्ध भूमि छोडकर जाना है। वह तर्क देते हैं कि युद्ध के कारण बहने वाले खून की नदी पार करके विजयी बनने से भी अच्छा भिखारी बनना है। भगवान श्रीकृष्ण उनको पुरुषार्थ का महत्व बताते हैं। अपना कर्म छोड़ने की प्रवृति नीच और अनार्य है, ऐसा ज्ञान गीता देती है। द्वितीय अध्याय के दूसरे एवं तीसरे श्लोकों में भगवान पूछते हैं–

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितं ।
अनार्यजुष्टमस्वर्गयमकीर्तिकरमर्जुन।।

हे अर्जुन तुझे इस दु:खदायी घड़ी में मोह किस हेतु से प्राप्त हुआ, क्योंकि यह अश्रेष्ठ पुरुषों का चरित्र है, यह स्वर्ग को देने वाला नहीं है और अपकीर्ति को करने वाला ही है। उतना मात्र नहीं, अगले श्लोक में और बल देकर भगवान कहते हैं।

'क्लैव्यं मा स्म गमः पार्थ नैनत्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्तोत्तिष्ठ परन्तपः।।'

भगवान का मत ऐसा है कि धर्म छोड़ना यानि कलीवता अथवा नपुंसकता है। उसको मत प्राप्त हो, क्योंकि तुम्हारे लिए यह अनुचित है। इसलिए हृदय की दुर्बलता को त्यागकर अपना कर्तव्य निभाने के लिए युद्ध के लिए खड़े हो जाओ।

यह भगवदगीता के महत्वपूर्ण उपदेश है। यह बात केवल युद्ध सम्बंधित नहीं है। जीवन के सब क्षेत्रों में यह लागू होती है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपना धर्म होगा। चाहे वह अध्यापक होगा या विद्यार्थी। मजदूर या अधिकारी कुछ भी हो अपने लिए मिले हुए धर्म को अवश्य मन:पूर्वक सफलतापूर्वक पूर्ण करना चाहिए। उसको ध्यानपूर्वक निपुणता के साथ करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। उसके प्रति अनदेखी करके व्यवहार करना हीनता है।

आज के युग में यह सन्देश सर्वदा प्रासंगिक है। अपने निजी धर्म, संस्कृति को छोड़कर बाकि चमकने वाले अन्य आदर्शों के पीछे दौड़ने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। स्वदेशी का सन्देश रखते हुए महात्मा गांधी जी ने इसी बात का विस्तार से प्रतिपादन

किया है। उन्होंने बताया है कि स्वदेशी याने स्वधर्म और उसके साथ स्वभाषा और स्वभूषा भी है। स्वदेशी कल्पना को गांधी जी ने व्यापक अर्थ में दिया है। वह 'स्व' से जुड़े हुए सब हैं। धर्म (Religion) के बारे में गांधीजी कहते हैं, हमारी परम्परा एवं परिसर में विद्यमान धर्म छोड़ना महापाप है। इसी प्रकार हमारी मातृभाषा एवं अपनी संस्कृति एवं सदाचार मूल्यों के साथ मेल खाने वाली नागरिक जीवन शैली भी होनी चाहिए। महात्माजी को इस तरीके का मार्ग एवं सिद्धांत अपनाने की प्रेरणा भगवद्गीता से मिली। उन्होंने कई बार यह बात प्रस्तुत भी की थी। भगवद्गीता को मन जैसा मानकर अनुसरण करने से संकटों से पार पा सकते हैं। गांधी जी को भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व करने की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन भगवद्गीता ने दिया। अंतोतगत्वा गीता प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म सम्बंधित ज्ञान देती है। और किसी भी स्थिति में धर्म पालन का अनुसरण और आवश्यकता पड़ने पर रक्षा करने के लिए रणभूमि में उतरने की ताकत भी देती है। इस बात को गहराई से समझकर उसका क्रियान्वयन करने वालों में केवल गांधीजी ही नहीं थे। सही अर्थ में स्वातंत्र्य का सामान्य समाज में भाव बनाने वाले लोकमान्य तिलक जी के पूरे क्रियाकलापों का सैधांतिक अधिष्ठान भी गीता दर्शन से ही बना। महर्षि अरबिंदो ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर राष्ट्रबोध की आग लगाने के लिए भगवद्गीता का भाष्य लिखा। 'जय हिन्द' का नारा लगाकर भारत मुक्ति के लिए अथक परिश्रम करने वाले महान देशभक्त नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सदस्यों को पढ़ने के लिए भगवद्गीता दी थी। लाखों करोड़ों देशवासियों के अन्दर देशभक्ति का ज्वार इसलिए जला और स्वातंत्रता आन्दोलन के कठिनतम मार्ग में वे कूद पड़े। यह सब इसलिए संभव हो पाया क्योंकि भगवद्गीता अपने इस देश के स्वत्व को ही प्रगट करती है। स्वाभाविक है सच्चे देशभक्तों को उससे प्रेरणा मिली। स्वधर्म पालन के रास्ते में चलने पर यदि मृत्यु भी प्राप्त हो गई तो भी परवाह नहीं। ऐसी सुव्यक्त जीवन दिशा भी उस निमित उन्हें मिली। गीता के तीसरे अध्याय का 35वां श्लोक इस दृष्टि पर उल्लेखनीय है–

''श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः पर धर्मात्स्व नुष्ठितात।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

अपना स्वधर्म चाहे परधर्मों के साथ तुलना करने के समय थोडा बहुत कम हो होगा। कम चमकने वाला होगा लेकिन उसको छोड़ना नहीं। परधर्म अपनाना नहीं। वह भयावह है। इसलिए स्वधर्म में तो मरना भी श्रेयस्कर है। भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों द्वारा सूली पर चढ़ने के समय भी भगवद्गीता हाथ में रखने का कारण और दूसरा कुछ भी नहीं था। आज भी स्थिति एक प्रकार से समान है। परधर्म अभी भी चमकने वाली वेशभूषा पहनकर देश में अलग-अलग क्षेत्रों में मौजूद है। स्वत्व बोध के अभाव के कारण बहुत सारे लोग भ्रमित होकर परधर्म के पीछे जाते हैं। शिक्षा से लेकर आर्थिक क्षेत्र तक। संस्कृति से लेकर धार्मिक मोर्चों तक सब दूर स्थिति गंभीर है। यह बात ठीक है कि राष्ट्रीय आदर्शों का प्रभाव भी बढ़ रहा है, लेकिन उसकी गति बढाने की जरूरत है। इस बीच हमको प्रेरणा देने की ताकत अपने राष्ट्र ग्रन्थ भगवद्गीता में है। फिर से एक बार गीता मां के पीछे चलकर स्वधर्म रक्षा के लिए सबको तैयार होना चाहिए।

अपना स्वधर्म चाहे परधर्मों के साथ तुलना करने के समय थोडा बहुत कम हो होगा। कम चमकने वाला होगा लेकिन उसको छोड़ना नहीं। परधर्म अपनाना नहीं। वह भयावह है। इसलिए स्वधर्म में तो मरना भी श्रेयस्कर है। भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों द्वारा सूली पर चढ़ने के समय भी भगवद्गीता हाथ में रखने का कारण और दूसरा कुछ भी नहीं था। आज भी स्थिति एक प्रकार से समान है। परधर्म अभी भी चमकने वाली वेशभूषा पहनकर देश में अलग-अलग क्षेत्रों में मौजूद है। स्वत्व बोध के अभाव के कारण बहुत सारे लोग भ्रमित होकर परधर्म के पीछे जाते हैं।

'अंब त्वामनुसंदधामी भगवद्गीते भवद्वेशीनीं।'❖

गाय की महिमा

उरुग्वे एक ऐसा देश है, जिसमें औसतन प्रत्येक नागरिक के पास चार गायें हैं और पूरे विश्व में व खेती के मामले में प्रथम है ! सिर्फ 33 लाख जनसंख्या का देश है उरूग्वे और 1 करोड़ 20 लाख गायें हैं।

प्रत्येक गाय के कान पर इलैक्ट्रॉनिक चिप लगा होता है, जिससे कौन सी गाय कहाँ पर है वे नजर रखते हैं। एक किसान मशीन के अंदर बैठा फसल कटाई कर रहा है तो दूसरा उसे स्क्रीन पर जोड़ता है कि फसल का डाटा क्या है ?इकट्ठा हुए डाटा के जरिए किसान प्रति वर्ग मीटर की पैदावार का विश्लेषण करेगा।

सन् 2005 में 33 लाख जनसंख्या का देश 90 लाख लोगों के लिए अनाज पैदा करता था, और वर्तमान में 2 करोड़ 80 लाख लोगों का अनाज पैदा होता है।

उरुग्वे देश के फसल प्रदर्शन के पीछे, किसानों और पशुपालकों का दशकों का अध्ययन शामिल है। पूरी खेती को देखने के लिए 500 कृषि इंजीनियर लगाए गए हैं और ये लोग ड्रोन और सैटेलाइट से किसानो पर नजर रखते हैं कि खेती का वही तरीका वो अपनाएं जो निर्धारित है। यानि दूध-दही घी-मक्खन के साथ आबादी से कई गुना ज्यादा अनाज उत्पादन सब आसानी से निर्यात होता है और प्रत्येक किसान लाखों में खेलता है। कम से कम प्रत्येक व्यक्ति की आय 1 लाख 25 हजार रूपए महीने है यानि 19000 डॉलर सालाना है ।❖ साभार सोशल मीडिया

राष्ट्रहित के लिए खत्म करें उच्च शिक्षा में आरक्षणः सुप्रीम कोर्ट

आजादी के 68 साल बाद भी कुछ वंचितों में हालात जस के तस हैं इस पर खेद जताते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राष्ट्रहित में यह आवश्यक हो गया है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं को सभी तरह के आरक्षण से दूर रखा जाए। शीर्षस्थ न्यायालय ने केन्द्र सरकार से यह भी कहा कि राष्ट्रहित में यह आवश्यक हो गया है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं को सभी तरह के आरक्षण से दूर रखा जाए। शीर्षस्थ न्यायालय ने केन्द्र सरकार से यह भी कहा कि वह इस संबंध में सकारात्मक प्रभावशाली कदम उठाए। सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु में सुपर स्पेशियलटी कोर्सेज में प्रवेश को लेकर योग्यता मानकों को चुनौती देने के लिए दायर याचिकाओं पर फैसले के दौरान की। याचिकाओं में कहा गया कि इन 3 राज्यों में इस कोर्स की परीक्षा में बैठने के लिए वहां का निवासी होने का नियम बना रखा है। न्यायाधीश दीपक मिश्रा और न्यायाधीश पी.सी. पंत की पीठ ने कहा कि सुपर स्पेशियलटी कोर्सेस में चयन का प्रारम्भिक मापदंड मैरिट बनाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के कई बार स्मरण दिलाने के बाद भी जमीनी हकीकत नहीं बदली। मैरिट पर आरक्षण का आधिपत्य रहता है। ❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

अब घास से सूक्ष्मजीवी बनाएंगे बायोडीजल

आईआईटी वैज्ञानिक ने सूक्ष्मजीवी के जरिए फसलों के अखाद्य हिस्से, भूसे आदि से बायोडीजल बनाने में कायाबी हासिल की है। इस शोध की खासियत यह है कि प्रयोगशाला में तैयार यह डीजल उद्योगों में काफी कम कीमत पर बड़े पैमाने पर तैयार किया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में शोध को मान्यता मिलने के बाद अब इसे पेटेंट कराने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। अभी तक बायोडीजल बनाने के लिए जो शोध हुए, उनमें मूंगफली और सूर्यमुखी आदि पर प्रयोग किया गया था लेकिन इस शोध में अमलतास की फलियों तथा भांग सहित चावल की भूसी, गेहूं के भूसे, सूखी घास और गन्ने की खोई जैसे बेकार पदार्थों से बायोडीजल तैयार करने में कामयाबी मिली है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकर के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की ओर से प्राप्त 50 लाख के इस प्रोजेक्ट पर शोध पूरा कर चुकी आईआईटी के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की वैज्ञानिक एवं प्रोजेक्ट की प्रधान अन्वेषक डॉ. पारूल अग्रवाल पुर्थी ने बताया कि रोडोस्परीडीयम नामक सूक्ष्मजीवी को माइक्रो ऑर्गेनिज्म प्रोसेस के जरिए अखाद्य पदार्थों के जलीय अर्क में विकसित किया जाता है। इसके बाद ट्रांसस्ट्रीफिकेशन प्रोसेस से सूक्ष्मजीवी की वसा से यह जैविक ईंधन से प्राप्त किया जाता है। इस विधि से प्राप्त बॉयोमास से 70 प्रतिशत तक बॉयोडीजल निकाल सकते हैं। यह बायोडीजल पूरी तरह ईको फ्रैंडली होगा। ❖ **साभार अमर उजाला**

भारत में स्कूल खोलेंगे फेसबुक के मार्क जुकरबर्ग

विश्व में सबसे लोकप्रिय सोशल मीडिया फेसबुक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मार्क जुकरबर्ग ने नेट निरपेक्षता का समर्थन करते हुए कहा कि दुनिया से जुड़ने के लिए भारत से जुड़ना बहुत जरूरी है। श्री जुकरबर्ग ने यहां आईआईटी दिल्ली में छात्रों और शिक्षकों के सवालों के जवाब में कहा कि वह भारत में भी अफ्रीका की तर्ज पर गरीब बच्चों के लिए स्कूल खोलना चाहते हैं। 'टाउनहॉल सेशन' में उन्होंने कहा कि वह नेट निरपेक्षता का समर्थन करते हैं। उनकी यह टिप्पणी ऐसे समय आई है, जब नेट निरपेक्षता को लेकर भारत में देशव्यापी बहस चल रही है। 31 वर्षीय जुकरबर्ग ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और दुनिया से जुड़ने के लिए भारत से जुड़ना बहुत जरूरी है।

आजादी के 68 साल बाद भी कुछ वंचितों में हालात जस के तस हैं इस पर खेद जताते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राष्ट्रहित में यह आवश्यक हो गया है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं को सभी तरह के आरक्षण से दूर रखा जाए। शीर्षस्थ न्यायालय ने केन्द्र सरकार से यह भी कहा कि राष्ट्रहित में यह आवश्यक हो गया है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं को सभी तरह के आरक्षण से दूर रखा जाए। शीर्षस्थ न्यायालय ने केन्द्र सरकार से यह भी कहा कि वह इस संबंध में सकारात्मक प्रभावशाली कदम उठाए। सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु में सुपर स्पेशियलटी कोर्सेज में प्रवेश को लेकर योग्यता मानकों को चुनौती देने के लिए दायर याचिकाओं पर फैसले के दौरान की। याचिकाओं में कहा गया कि इन 3 राज्यों में इस कोर्स की परीक्षा में बैठने के लिए वहां का निवासी होने का नियम बना रखा है। न्यायाधीश दीपक मिश्रा और न्यायाधीश पी.सी. पंत की पीठ ने कहा कि सुपर स्पेशियलटी कोर्सेस में चयन का प्रारम्भिक मापदंड मैरिट बनाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के कई बार स्मरण दिलाने के बाद भी जमीनी हकीकत नहीं बदली। मैरिट पर आरक्षण का आधिपत्य रहता है। ❖

मधुमेह मुक्त हो भारत

- श्री श्रीनिवास मूर्त्ति

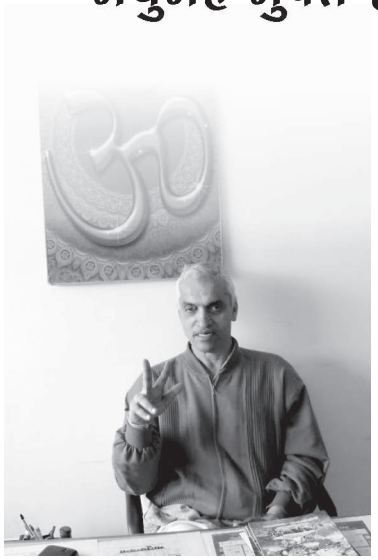

मधुमेह एक ऐसी व्याधि है जो प्राय: 40 वर्ष की आयु के पश्चात् बौद्धिक व्यवसाय करने वाले वकीलों, पत्रकारों, चिकित्सकों, इंजीनियरों, दफ्तर में काम करने वाले, व्यापारियों तथा अधिक देर तक बैठकर काम करने वाले व्यक्तियों में होती है। अपने देश में भी लगभग एक करोड़ बीस लाख लोग इससे पीड़ित हैं। मधुमेह मुक्त भारत अभियान के अखिल भारतीय संयोजक श्री श्रीनिवास मूर्ति सम्पूर्ण देश में प्रवास पर निकले हैं। प्रस्तुत हैं इस विषय विशेष पर हिमाचल प्रदेश प्रवास पर उनसे हुई वार्तालाप के मुख्य अंश।

प्रश्न:- सम्पूर्ण देश को मधुमेह मुक्त करने वाले अभियान के प्रमुख के रूप में अपनी भूमिका को आप किस प्रकार देखते हैं?

उत्तर:- यह अपने प्रकार का एक विशिष्ट अभियान है। किसी भी अभियान से जुड़ने से पूर्व स्वयं को उसके अनुरूप तज्ञ बनाना एवं स्वयं से प्रारम्भ करना यही इस अभियान में मेरी मनोभूमिका है। अभियान से जुड़कर एक सुखद अनुभव की अनुभूति कर रहा हूँ।

प्रश्न:- मधुमेह मुक्त भारत अभियान क्या है?

उत्तर:- मधुमेह निरंतर तनाव के कारण पनपा डिसआर्डर है। मधुमेह का अर्थ है मिठास का शरीर से बाहर निकल जाना। जब शरीर कार्बोहाईट्रेड से पैदा हुए (स्टार्च व चीनी) ग्लूकोज को अपने अंदर समा नहीं पाता और उसका उपयोग भली-भांति नहीं कर पाता तो लोगों के खून में चीनी की मात्रा बढ़ जाती है। अत: रोगी को छह माह के बाद यूरिया कोलेस्ट्रॉल और ग्लूकोज की जांच करते रहना चाहिए। मधुमेह दूर करने के लिए लाइफ स्टाईल को बदलना जरूरी है। इसी अभियान को लेकर मैं देश भर के प्रवास में निकला हूँ।

प्रश्न:- देश में अनेकों संस्थाएं इस विषय पर काम कर रही हैं, आपका आग्रह मुख्य रूप से किस विषय पर है?

उत्तर:- ऐसा कम ही देखने में आया है कि इस प्रकार के अभियान को लेकर कोई कार्य कर रहा हो। मेरा देश भर में अभी प्रवास हो रहा है। जगह-जगह पर शिविरों में हजारों की संख्या में मधुमेह पीड़ित व्यक्तियों को कैसे इस बीमारी से बचा जा सकता है, इसी संबंध में जानकारी दी जा रही है। मेरा आग्रह व्यक्ति की दिनचर्या एवं खानपान के तौर तरीकों में कुछ बदलाव को लेकर है। प्रात:काल कुछ समय यदि अपने शरीर के लिए निकाल लिया जाएं तो इस तरह की बीमारी से बचा जा सकता है। साथ ही साथ भोजन की संतुलित मात्रा का सेवन उचित समय से करने पर भी विशेष ध्यान दे सकते हैं। आयुर्वेद और गौ-अर्क के सेवन भी इसका इलाज संभव है।

मधुमेह निरंतर तनाव के कारण पनपा डिसआर्डर है। मधुमेह का अर्थ है मिठास का शरीर से बाहर निकल जाना। जब शरीर कार्बोहाईट्रेड से पैदा हुए (स्टार्च व चीनी) ग्लूकोज को अपने अंदर समा नहीं पाता और उसका उपयोग भली-भांति नहीं कर पाता तो लोगों के खून में चीनी की मात्रा बढ़ जाती है। अत: रोगी को छह माह के बाद यूरिया कोलेस्ट्रॉल और ग्लूकोज की जांच करते रहना चाहिए। मधुमेह दूर करने के लिए लाइफ स्टाईल को बदलना जरूरी है।

प्रश्नः- किन-किन राज्यों में अभी तक आपका प्रवास हो चुका है?

उत्तरः- महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा एवं अभी हिमाचल प्रदेश में ही प्रवास हुआ है।

प्रश्नः- इस अभियान को आरंभ हुए अभी कितना समय हुआ है तथा अभी तक क्या परिणाम सामने आए हैं?

उत्तरः- विश्व योग दिवस, 21 जून 2015, से इस विषय पर कार्य करना प्रारंभ हुआ है तथा जुलाई 2020 तक लगभग पाँच वर्ष इसपर कार्य हो सकता है। देश भर में जगह-जगह मधुमेह मुक्त भारत अभियान चल रहा है, जिसमें भारी संख्या में लोग इसका लाभ उठा रहे हैं। योग को लेकर हर राज्य की स्थितियां अलग-अलग है। पतंजलि योग केंन्द्र केरल में 1000 कैंप लगाए गए। कई स्थानों पर योग शिक्षकों के माध्यम से इस समस्या से अवगत करवाया गया। सम्पूर्ण देश में 6000 कार्यकर्ता इस कार्य में लगे हैं। 2000 कैंप अभी तक आयोजित किए जा चुके हैं एवं 22000 लोगों का SRL द्वारा रक्त की जांच की गई है।

प्रश्नः- हिमाचल प्रदेश भी इस व्याधि से अछूता नही है। इस प्रदेश के पीड़ितों के लिए आपका क्या योजनाक्रम रहेगा?

उत्तरः- पर्वतीय प्रदेश होने के कारण यहॉ के निवासियों का जीवन क्रम प्रातःकाल से ही संघर्ष का है। सामान्यतः यह व्याधि खान-पान व अनियमित दिनचर्या से जुड़ी हुई है । शहरी क्षेत्र में रहने के कारण तनाव, अनियमित दिनचर्या एवं असंयमित खान-पान ही इस समस्या की प्रमुख जड़ है। यहां जिला स्तर पर टोली का गठन हो चुका है। कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण का क्रम चल रहा है शीघ्र ही पूरे प्रदेश में एक बड़ा अभियान लेकर ब्लॉक स्तर पर मधुमेह मुक्त शिविरों की आयोजन कर इस अभियान की सार्थकता पर बल दिया जाएगा।

प्रश्नः- पत्रिका के पाठकों के लिए आपके दो शब्द?

उत्तरः- एक लम्बे कालखंड तक यहां रहने के कारण मुझे मातृवन्दना पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जितना समय मैं यहां रहा पत्रिका को सामाजिक पत्रिका के रूप में ही देखना चाहा। हर प्रकार के सामाजिक व तात्कालिक विषय इसके माध्यम से पाठकों तक पहुँचें यही अपेक्षा है। मातृवन्दना पत्रिका भी मधुमेह मुक्त भारत अभियान में उपयोगी सिद्ध होगी ही इसलिए इसके नियमित प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।❖

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE

(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr. Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr. Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोब्लम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का एक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

दूरभाष पर सम्पर्क करें।

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें:

Regular Clinic:
C/o K.K. Sharma Vivek Nagar
Pingah Road, Una (H.P.)

जनसंख्या वृद्धि दर में असंतुलन की चुनौती

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल बैठक रांची में पारित प्रस्ताव

देश में जनसंख्या नियंत्रण हेतु किए विविध उपायों से पिछले दशक में जनसंख्या वृद्धि दर में पर्याप्त कमी आयी है। लेकिन, इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल का मानना है कि सन् 2011 की जनगणना के पांथिक आधार पर किये गये विश्लेषण से विविध संप्रदायों की जनसंख्या के अनुपात में जो परिवर्तन सामने आया है, उसे देखते हुए जनसंख्या नीति पर पुनर्विचार की आवश्यकता प्रतीत होती है। विविध सम्प्रदायों की जनसंख्या वृद्धि दर में भारी अन्तर, अनवरत विदेशी घुसपैठ व मतांतरण के कारण देश की समग्र जनसंख्या विशेषकर सीमावर्ती क्षेत्रों की जनसंख्या के अनुपात में बढ़ रहा असंतुलन देश की एकता, अखंडता व सांस्कृतिक पहचान के लिए गंभीर संकट का कारण बन सकता है।

विश्व में भारत उन अग्रणी देशों में से था, जिसने वर्ष 1952 में ही जनसंख्या नियंत्रण के उपायों की घोषणा की थी, परन्तु सन् 2000 में जाकर ही वह एक समग्र जनसंख्या नीति का निर्माण और जनसंख्या आयोग का गठन कर सका। इस नीति का उद्देश्य 2-1 की 'सकल प्रजनन-दर' की आदर्श स्थिति को सन् 2015 तक प्राप्त कर स्थिर व स्वस्थ जनसंख्या के लक्ष्य को प्राप्त करना था। ऐसी अपेक्षा थी कि अपने राष्ट्रीय संसाधनों और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रजनन-दर का यह लक्ष्य समाज के सभी वर्गों पर समान रूप से लागू होगा। परन्तु वर्ष 2005-06 का राष्ट्रीय प्रजनन एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षण और सन् 2011 की जनगणना के 0-6 आयु वर्ग के पांथिक आधार पर प्राप्त आंकड़ों से 'असमान' सकल प्रजनन दर एवं बाल जनसंख्या अनुपात का संकेत मिलता है। यह इस तथ्य में से भी प्रकट होता है कि वर्ष 1951 से 2011 के बीच जनसंख्या वृद्धि दर में भारी अन्तर के कारण देश की जनसंख्या में जहां भारत में उत्पन्न मत-पंथों के अनुयायिओं का अनुपात 88 प्रतिशत से घटकर 83.8 प्रतिशत रह गया है, वहीं मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात 9.8 प्रतिशत से बढ़ कर 14.23 प्रतिशत हो गया है।

इसके अतिरिक्त, देश के सीमावर्ती प्रदेशों यथा असम, पश्चिम बंगाल व बिहार के सीमावर्ती जिलों में तो मुस्लिम जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है, जो स्पष्ट रूप से बंगलादेश से अनवरत घुसपैठ का

संकेत देता है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त उपमन्यु हजारिका आयोग के प्रतिवेदन एवं समय-समय पर आये न्यायिक निर्णयों में भी इन तथ्यों की पुष्टि की गयी है। यह भी एक सत्य है कि अवैध घुसपैठिये राज्य के नागरिकों के अधिकार हड़प रहे हैं तथा इन राज्यों के सीमित संसाधनों पर भारी बोझ बन सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक तनावों का कारण बन रहे हैं।

पूर्वोत्तर के राज्यों में पांथिक आधार पर हो रहा जनसांख्यिकीय असंतुलन और भी गंभीर रूप ले चुका है। अरुणाचल प्रदेश में भारत में उत्पन्न मत-पंथों को मानने वाले जहां सन् 1951 में 99.21 प्रतिशत थे, वे सन् 2001 में 81.3 प्रतिशत व सन् 2011 में 67 प्रतिशत ही रह गये हैं। केवल एक दशक में ही अरूणाचल प्रदेश में ईसाई जनसंख्या में 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार मणिपुर की जनसंख्या में इनका अनुपात सन् 1951 में जहां 80 प्रतिशत से अधिक था, वह सन् 2011 की जनगणना में 50 प्रतिशत ही रह गया है। उपरोक्त उदाहरण तथा देश के अनेक जिलों में ईसाईयों की अस्वाभाविक वृद्धि दर कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा एक संगठित एवं लक्षित मतांतरण की गतिविधि का ही संकेत देती है।

अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल इन सभी जनसांख्यिकीय असंतुलनों पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए सरकार से आग्रह करता है कि-

1. देश में उपलब्ध संसाधनों, भविष्य की आवश्यकताओं एवं जनसांख्यिकीय असंतुलन की समस्या को ध्यान में रखते हुए देश की जनसंख्या नीति का पुनर्निर्धारण कर उसे सब पर समान रूप से लागू किया जाए।
2. सीमा पार से हो रही अवैध घुसपैठ पर पूर्ण रूप से अंकुश लगाया जाए। राष्ट्रीय नागरिक पंजिका का निर्माण कर इन घुसपैठियों को नागरिकता के अधिकारों से तथा भूमि खरीद के अधिकार से वंचित किया जाए।

अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल सभी स्वयंसेवकों सहित देशवासियों का आवाहन करता है कि वे अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मानकर जनसंख्या में असंतुलन उत्पन्न कर रहे सभी कारणों की पहचान करते हुए जन-जागरण द्वारा देश को जनसांख्यिकीय असंतुलन से बचाने के सभी विधि सम्मत प्रयास करें।

पवित्र श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की बेअदबी पर समस्त देशवासी आहत- सरकार्यवाह भैया जी जोशी

समस्त भारतवासियों की श्रद्धा व आस्था के केन्द्र पवित्र श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के पावन स्वरूप की बेअदबी करने से सभी देशवासियों के हृदय पर गहरा आघात पहुंचा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस कृत्य की कड़े शब्दों में निंदा करता है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब 'जगत जोत' गुरू स्वरूप तो हैं ही, साथ ही भारत की चिरन्तन आध्यात्मिक एवं सास्कृतिक चेतना के संवाहक हैं तथा सांझीवालता के नाते समस्त भारत को जाति-पाति, मत-पंथ, उँच-नीच व क्षेत्र-भाषा के विभेदों से उंचा उठाकर एक साथ जोड़ते हैं।

जिला फरीदकोट के बरगाड़ी गांव में हुई इस दुखद घटना के बाद, तरनतारण जिले के ग्राम बाठ एवं निज्झरपुरा में तथा लुधियाना के घवंदी गांव में क्रमवार हुई घटनाओं से स्पष्ट है कि कुछ स्वार्थी व राष्ट्रविराधी तत्व सुनियोजित षड़यंत्र के अन्तर्गत पंजाब का सौहार्दपूर्ण वातावरण बिगाड़ना चाहते हैं। उपरोक्त सभी कृत्यों की निंदा करते हुए सम्पूर्ण देश व समाज का आह्वान करता है कि वह ऐसे षड़यंत्रों को विफल कर भारत की धार्मिक व सामाजिक सौहार्द की परम्परा को सुदृढ़ करे। संघ का पंजाब सरकार से यह अनुरोध है कि वह इन कुकृत्यों के दोषी तत्वों को चिह्नित कर कठोर कार्रवाई करे और केन्द्र सरकार से भी आग्रह है कि इन षड़यंत्रों के पीछे सक्रिय तत्वों की जाँच कर उन्हें उजागर करे।❖

प्रहरी हम

जान जाने से लेकर नींद जाने तक
हद लांघते खतरे ही खतरे,
आगाज हैं हम जो दीवारें छानते हैं
निपट लेंगे दुश्मन से, पर कैसे भगाएं
अपनों का डर?
इस डर ने ही तो दिया नया जोश
और विस्फोटक स्वर,
गद्दारी हालत ऐसी बनाती आगे कुआं,
पीछे खाई।
आपसी भेद भुला शत्रु मंसूबे करने हैं
नेस्तनावूद बन निडर,
खबरदार, सरहदी संतरी पीठ पीछे न सोईए?
घोड़े बेच।
सिरचढ़ा सर उठा रहा फिर गड़बड़ाती इन्साफ डगर,
मार्ग रक्षा सुरक्षा का भला वीरों का यहां
कैसा बसन्त,
आजादी के दीवानों का होता रहे मान न
हो देशभक्ति सिफर,
देशगान अंग संग लिए वैसे ही जैसे
अनेकता में एकता के रंग।
थाली में परोसी नहीं मिली आजादी ख्याल
रहे कुर्बानी, रणबांकुरे वो पितर,
मिल जुलकर जगाईए, रात को, बन सजग प्रहरी
क्या मजाल परिंदा भी मार सके पर,
जरा शपथ लें हम अमर जवान यानि
आन-बान और शान की।
सीने की आग बनी शोला चढ़ा रहे युद्ध ज्वर,
सुनो उतनी भी थकी मांदी नहीं आराम
को गई वर्दी
कि ललकारे बिना ही दुबकी रहे घर।।

भीम सिंह परदेसी
महादेव सुन्दर नगर, मण्डी

मेरा प्यारा भारत विशाल

बहती जहां शाश्वत गंगा की धारा,
पुनीत, पावन हर जर्रा, हर किनारा,
संस्कृति को जिसकी माने श्रेष्ठ जग सारा,
वह मेरा प्यारा भारत विशाल।
भगत सिंह, सुभाष जैसे हुए जहां लाल,
दीवाली, रमजान, उड़े होली का गुलाल,
प्रहरी है जिसका हिमालय विशाल,
वह मेरा प्यारा भारत विशाल।
विकास की राह पर जो बढ़ रहा,
आयाम सफलता के नए से नए गढ़ रहा है,
कामयाबी के शिखर की ओर चढ़ रहा है,
वह मेरा प्यारा भारत विशाल।।

मनोज कुमार ''शिव'', बिलासपुर

भारतीयता

वह जहां से भी गुजरता था,
सबसे प्यार से बतियाता था।
जैसे हो वह अपना ही,
सब पर स्नेह लुटाता था।।
दिखे कहीं मंदिर, मस्जिद उसे तो,
सर सजदे में उसका झुक जाता था।
एक ही मालिक को
सबमें वह पाता था।।
पूछे जो कोई दीन-ईमान
सब को इन्सान, इंसानियत बतलाता था।
सब थे दुविधा में, कि
आखिर किस धर्म से उसका नाता था।।
एक दिन सब थे घेरे उसको,
पूछते बताओ किस, समुदाय में तुम आते हो?
सबसे इतना प्रेम हो करते,
सबका सुख-दु:ख में साथ निभाते हो।।
वह बोला, मेरी मां है धरती माँ
पिता मेरा ऊपर वाला है।

वासुदेव कुमार
शिमला

अष्टम् सोपानम्

संस्कृतं वदाम

1. अध्यापकानां वार्तालापः (अध्यापकों की बातचीत)

अद्य विद्यालये छात्राः न्यूनाः सन्ति।
आज विद्यालय में छात्र कम हैं।
सत्यम् अद्य नगरे मेलापकः अस्ति।
हां आज नगर में मेला है।
भवतः विभागे कति छात्राः सन्ति।
आपके विभाग में कितने छात्र हैं।
मम! विभागे त्रिंशत् एव सन्ति।
मेरे विभाग में तीस ही हैं।
अस्मिन् वर्षे गृह- परीक्षा कदा अस्ति?
इस साल हाऊस टेस्ट कब हैं?
प्रायः अग्रिमे मासे भवेत्।
शायद अगले मास हो।
परश्वः अवकाशः अस्ति किम्?
परसों छुट्टी है क्या?
आम्! प्राचार्यः वदतिस्म।
हां, प्रिंसिपल जी बोल रहे थे।
नूतनं अधिवेतनं प्राप्तं किम्?
नया अधिवेतन मिल गया क्या?
सम्भवतः अग्रिमे मासे आगच्छेत्?
शायद अगले महीने आये।

2. शब्दकोषः (भोजनवर्गः)

रोटिका (स्त्री.)	रोटी
यवागूः (पु.)	दलिया
ओदनम् (नपु.)	भात
मोदकम् (नपु.)	लड्डू
सूपः (पु.)	दाल
तेमनम् (नपु.)	कढ़ी
संयावः (पु.)	हल्वा
शाकम् (नपु.)	सब्जी
उपसेचनम् (नपु.)	चटनी
पूरिका (स्त्री.)	पूरी
पायसम् (नपु.)	खीर
पर्पटः (पु.)	पापड़

3. व्याकरणम् (आज्ञा देना, निवेदन करना- लोट् लकार)

किसी को आज्ञा देना अथवा प्रार्थना/निवेदन करना आदि अर्थ में सामान्यतः लोट् लकार का प्रयोग होता है। आज्ञा देना और निवेदन करना- इसका अन्तर केवल बोलने के ढंग से ही (लिखित में प्रसंग से) स्पष्ट होता है।

उदाहरणम्

रमेश! फल खाओ- रमेश! फल खादतु।
आप फल खाइयेगा- भवान् फलं खादतु।
तुम सब पुस्तक को पढ़ो- भवन्तः पुस्तकं पठन्तु।
क्या, हम सब एक प्रश्न को पूछ सकते हैं?- किं वयम् एकं प्रश्नं पृच्छाम्?
हम सब संस्कृत बोलें।- वयं संस्कृतं वदाम।

विशेष- बोलने के ढंग, प्रकार से वाक्य के अर्थ परिवर्तन के कारण को भाषा विज्ञान में बलाघात प्रभाव कहते हैं।❖

भावी विज्ञान और तकनीक की भाषा होगी संस्कृत

लंदन और आयरलैण्ड में वहां की शिक्षा में शामिल होने वाली संस्कृत अपनी ही जमीन पर तीसरी भाषा के स्थान पर स्वीकार की गई है। भारत की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी अत्यंत संवेदनशील है। उन्हें संस्कृत की महानता समझने की जरूरत है। अगर स्मृति तीव्र करना, ब्लड सर्कुलेशन संतुलित करना और जीभ की मांसपेशियों का व्यायाम करना हो तो, सभी स्थितियों में संस्कृत शब्दों का उच्चारण करना चाहिए। 102 अरब 78 करोड़, 50 लाख शब्दों की भाषा का खिताब प्राप्त है इसे। चर्चा में कई बार लोग कहते हैं कि विश्व में बड़ा बनना है तो अंग्रेजी का ही सहारा लेना पड़ेगा और कोई रास्ता नहीं है। ऐसा सोचने वाले को आज नही तो कल अपना विचार बदलना पड़ेगा। कहते हैं बुद्धिमान लोग दूसरों की गल्तियों से सीख लेते हैं जबकि मूर्ख अपनी गल्तियों से। देवभाषा को जो सम्मान आज विश्वभर के विद्वान दे रहे हैं, वह उसे भारत-भूमि पर मिले, इसके लिए आवश्यक है कि संस्कृत हमारी दैनिक व्यवहार का अभिन्न अंग बन जाए। हम कर्मकाण्ड, मंदिर आदि में चाहे अनचाहे जिन शब्दों का उच्चारण कर जाते हैं या करते हैं उनका भाव समझने का प्रयास आरम्भ कर दें, यहीं से संस्कृत का उत्थान प्रारम्भ हो जाएगा। ❖साभार : भारतीय धरोहर

जैविक खादों के प्रयोग पर बल देना होगा

कृषि तथा बागवानी की विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्तम व गुणवत्ता उत्पादन के लिए कई कारकों का योगदान होता है। सभी कारकों का मुख्य उद्देश्य पौधों को स्वस्थ रखना है जिससे इनसे लंबे समय तक उत्तम उत्पादन की प्राप्ति की जा सके। स्वस्थ पौधे पौष्टिक फल, फूल, सब्जियां तथा अन्य फसलें पैदा करने में सक्षम होते हैं। पौधों के नियमित उचित स्वास्थ्य वर्धन के लिए इनमें पौषक तत्वों की उपलब्धि का समुचित मात्रा में होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक अनुमान के अनुसार संपूर्ण फल व फसल उत्पादन की कुल लागत का लगभग 20 से 25 प्रतिशत भाग पौधों की खाद तथा उर्वरकों पर खर्च हो जाती है। उर्वरकों के अधिक प्रयोग से पौधों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा इसके साथ-साथ भूमि की उर्वरकता भी धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है जिसके कारण पौधों की उत्पादकता भी कम होने लगती है। अत: उर्वरकों के प्रयोग में विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता है।

भूमि में उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर ही करना चाहिए जिससे मिट्टी का स्वास्थ्य तथा पौधों के विकास, वृद्धि व गुणवत्ता उत्पादन में सामंजस्य तथा सतुंलन बना रहे, इसलिए यह आवश्यक है कि जैविक खादों का प्रयोग एकीकृत प्रणाली द्वारा अपनाया जाए। जैविक खाद विशेषकर (वैसिकुलर आखुसकुलर माईकोरायजी) जिसे संक्षिप्त में वैम भी कहते हैं सबसे महत्वपूर्ण है। इसके प्रयोग से उर्वरकों की मात्रा में खासी कमी की जा सकती है और उर्वरकों द्वारा जनित समस्याओं में भी कमी हो सकेगी। वैम के प्रयोग से सहजीविता क्रिया को बढ़ावा मिलता है जिसके फलस्वरूप पौधों में उपयुक्त विकास तथा फल उत्पादन में वृद्धि तथा स्वास्थ्य लाभ मिलता है। वैम पौधों की भूमि में उपलब्ध पोषक तत्वों को अधिक मात्रा में प्राप्त कराने में सहायता प्रदान करता है जिसमें विशेषकर फास्फोरस तथा सूक्ष्म पोषक तत्व, उल्लेखनीय हैं, इसके अतिरिक्त पौधों में सूखे की स्थिति को सहन करने की शक्ति भी बढ़ जाती है, पानी की सृजन शक्ति में विकास तथा कई रोग और कीड़ों से लड़ने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। माईकोराईज के कारण पौधों की जड़ों के पोषक तत्वों के शोषण करने के क्षेत्रफल में वृद्धि के कारण तथा चिलेटिड तत्वों व एक्टोजाईम उत्पादन से फलों के उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि होती है। मिट्टी में पनप रहे जड़ गलन को रोकने में भी सहायक है। भूमि में स्थित फॉस्फोरस तत्व जो पौधों को सुगमता से उपलब्ध नहीं हो पाता और इस तत्व की कमी कुछ समय बाद दिखाई देने लगती है, को घुलनशील अम्लीय पदार्थों तथा विकर क्रिया (एंजाईम) द्वारा शीघ्रता से उपलब्ध कराता है।

वैम फंफूंद मिट्टी के कणों को अर्धस्थायी अवस्था में इसकी संरचना, बनावट, जल संग्रहण तथा पोषक तत्वों को ग्रहण करने की शक्ति में सम्मानजनक वृद्धि करता है। इसके प्रयोग से मिट्टी की पीएच भी एक समान ही रहती है। फलों में किए गए प्रयोगों से सिद्ध हुआ है कि वैम द्वारा मिठास तथा अम्लीय पदार्थों का अनूठा समिश्रण बनता है जो फलों में अत्यंत स्वादिष्टता प्रदान करता है। वैम फंफूद को प्रयोग करने के लिए मिट्टी की सबसे ऊपरी सतह को हटाकर लगभग 10 से 15 सेमी. की गहराई तक फल पौधों के तने के चारों ओर लगभग 75 से 90 सेमी. क्षेत्र में जड़ों के आसपास करना चाहिए। इसके उपरांत गिली मिट्टी में इस फफूंद को मिश्रित करके इस क्षेत्र में मिला देना चाहिए और इसे फिर मिट्टी से ढक देना आवश्यक है। वैम फफूंद के विभिन्न व्यावसायिक उत्पाद बाजार में उपलब्ध होने लगे हैं। इन जैविक खादों के प्रयोग से मुख्य उर्वरकों की मात्रा में भी कमी आती है। फॉस्फोरस खाद की मात्रा में 75 प्रतिशत नत्रजन तथा पोटाश की सामान्य अनुमोदित मात्रा से 50 प्रतिशत तक कम प्रयोग किया जा सकता है। इससे न केवल उर्वरकों के प्रयोग में कमी आएगी अपितु भूमि की उत्पादन शक्ति को लंबे समय तक बरकरार रखा जा सकेगा। वैम के प्रयोग से पर्यावरण में सुधार होगा तथा अनावश्यक उर्वरकों के प्रयोग में कमी करके पैसों की बचत होगी। इस दिशा में कुछ ही सीमित प्रयोग फसलों तथा कुछ फलदार पौधों पर किए गए हैं। इससे कोई संदेह नहीं है कि जैविक खादों का उपयोग व्यापक स्तर पर मुख्य व्यावसायिक फल व फसलों पर बढ़ेगा और निस्संदेह लाभ भी प्राप्त होगा लेकिन इन सब पहलुओं पर वैज्ञानिक ढंग से मूलभूत शोध कार्य करने की आवश्यकता है।❖

रामजन्मभूमि आन्दोलन के पुरोधा श्री अशोक सिंघल पंचतत्व में विलीन

नब्बे के दशक में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन जब अपने यौवन पर था, उन दिनों जिनकी सिंह गर्जना से रामभक्तों के हृदय हर्षित हो जाते थे, उन श्री अशोक सिंहल को संन्यासी भी कह सकते हैं और योद्धा भी, पर वे जीवन भर स्वयं को संघ का एक समर्पित प्रचारक ही मानते रहे।अशोकजी का जन्म आश्विन कृष्ण पंचमी (27 सितम्बर, सन् 1926) को उ.प्र. के आगरा नगर में हुआ था। उनके पिता श्री महावीर सिंघल शासकीय सेवा में डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट पद पर थे। घर के धार्मिक वातावरण के कारण उनके मन में बालपन से ही हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम जाग्रत हो गया। उनके घर संन्यासी तथा धार्मिक विद्वान आते रहते थे। कक्षा नौ में उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पढ़ी। उससे भारत के हर क्षेत्र में सन्तों की समृद्ध परम्परा एवं आध्यात्मिक शक्ति से उनका परिचय हुआ। सन् 1942 में प्रयाग में पढ़ते समय प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) ने उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से कराया। उन्होंने बालक अशोक की माता जी को संघ के बारे में बताया और संघ की प्रार्थना सुनायी। इससे माता जी ने बालक अशोक जी को शाखा जाने की अनुमति दे दी।

सन् 1947 में देश विभाजन के समय कांग्रेसी नेता सत्ता प्राप्ति की खुशी मना रहे थे, पर देशभक्तों के मन इस पीड़ा से सुलग रहे थे कि ऐसे सत्तालोलुप नेताओं के हाथ में देश का भविष्य क्या होगा ?अशोक जी भी उन युवकों में थे। अत: उन्होंने अपना जीवन संघ कार्य हेतु समर्पित करने का निश्चय कर लिया। बचपन से ही अशोक जी की रुचि शास्त्रीय गायन में रही है। संघ के अनेक गीतों की लय उन्होंने ही बनायी है।

सन् 1948 में संघ पर प्रतिबन्ध लगा, तो अशोक जी सत्याग्रह कर जेल गये। वहाँ से आकर उन्होंने बी.ई. (धातु-इंजीनियरिंग)अंतिम वर्ष की परीक्षा दी,तत्पश्चात प्रचारक बन गये। अशोक जी की सरसंघचालक श्री गुरुजी से बहुत घनिष्ठता रही। प्रचारक जीवन में लम्बे समय तक वे कानपुर रहे। यहाँ उनका सम्पर्क श्री रामचन्द्र तिवारी नामक विद्वान से हुआ। वेदों के प्रति उनका ज्ञान विलक्षण था।

अशोक जी अपने जीवन में इन दोनों महापुरुषों का प्रभाव स्पष्टत: स्वीकार करते हैं।

सन् 1975 से 1977 तक देश में आपातकाल और संघ पर प्रतिबन्ध रहा। इस दौरान अशोक जी इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरुद्ध हुए संघर्ष में लोगों को जुटाते रहे। आपातकाल के बाद वे दिल्ली के प्रान्त प्रचारक बनाये गये। सन् 1981 में डॉ. कर्ण सिंह के नेतृत्व में दिल्ली में एक विराट हिन्दू सम्मेलन हुआ पर उसके पीछे का परिश्रम अशोक जी का ही था। उसके बाद अशोक जी को विश्व हिन्दू परिषद् की जिम्मेदारी दी गयी।

परिषद् के काम में धर्म जागरण, सेवा, संस्कृत, परावर्तन, गोरक्षा आदि अनेक नये आयाम जुड़े। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है श्रीराम जन्मभूमि मंदिर आन्दोलन, जिससे परिषद् का काम गाँव-गाँव तक पहुँच गया। इसने देश की सामाजिक और राजनीतिक दिशा बदल दी। भारतीय इतिहास में यह आन्दोलन एक मील का पत्थर है। आज वि.हि.प. की जो वैश्विक ख्याति है, उसमें अशोक जी का योगदान सर्वाधिक है।

अशोक जी परिषद् के काम के विस्तार के लिए विदेश प्रवास पर जाते रहे हैं। इसी वर्ष अगस्त-सितम्बर में भी वे इंग्लैंड, हालैंड और अमरीका के एक महीने के प्रवास पर गये थे। परिषद् के महामंत्री श्री चम्पत राय जी भी उनके साथ थे। पिछले कुछ समय से उनके फेफडों में संक्रमण हो गया था। इससे उन्हें सांस लेने में परेशानी हो रही थी। इसी के चलते 17 नवम्बर, 2015 को दोपहर 2:25 बजे गुड़गांव के मेदांता अस्पताल में उनका निधन हो गया। मातृवन्दना संस्थान की ओर से श्री रामजन्मभूमि आंदोलन के पुरोधा स्व. श्री अशोक सिंघल को अश्रुपूरित नेत्रों से विनम्र श्रद्धांजलि।❖

विश्व में बजेगा हिन्दी का डंका

हिंदी को संस्कृत का मातृत्व मिला है। संस्कृत विश्व की पांच वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है। इसी क्रम में अत्याधुनिक तकनीक के साथ जुड़कर हिंदी ने विश्व की उन्नत और वैज्ञानिक भाषाओं में अपना सम्मानजनक स्थान बनाया है। इसका सर्वोतम प्रमाण है इंटरनेट पर हिंदी भाषा का बढ़ता प्रयोग और हिंदी में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध विषय वस्तु। अपने देश में ही नहीं, अपितु विदेशी में भी हिंदी में इंटरनेट पर सामग्री खोजने-पढ़ने वालों की संख्या में आश्चर्यजनक रूप में वृद्धि हो रही है। हाल ही में सामने आई एक जानकारी के अनुसार अकेले हमारे देश में ही ऐसे इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या 94 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, जबकि अंग्रेजी की सामग्री के प्रयोग में मात्र 19 प्रतिशत की दर से ही वृद्धि हुई है। एक मार्केटिंग सर्वेक्षण के अनुसार हर पांच में से एक व्यक्ति (अर्थात 21प्रतिशत लोग) हिंदी में इंटरनेट पर काम करना चाहता है। इस रूझान को देखते हुए गूगल जैसी दिग्गज कंपनी ने अपने सर्च और मैप जैसे उत्पादों को हिंदी में लाने का निर्णय लिया है। ध्यान दें कि भारत में सन् 2011 में जहां 10 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता थे वहीं 2017 तक यह संख्या 50 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। कहने का अर्थ यह है कि इंटरनेट पर हिंदी में काम करना अत्यंत सुविधाजनक है और इस क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग स्वत: बढ़ रहा है। हिंदी ने इसे अत्यंत संभावनाशील बाजार भी दिया है। किसी को भी आश्चर्य होगा कि भारतवर्ष में लगभग 15 करोड़ लोग मोबाइल पर इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। यह संख्या केवल महानगरों की नहीं है, छोटे शहरों, कस्बों और गांवों के लोग भी इसमें सम्मिलित हैं। कहने का अर्थ यह है कि हिंदी मनोरंजन, सूचना और ज्ञान का सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। इस धर्मप्राण राष्ट्र की आत्मा को मुखर करने वाली भाषा तो यह है ही। ❖ **साभार: त्रिकुटा संकल्प**

सड़क पर बाइक, खेत में ट्रैक्टर

सोचो अगर कोई गाड़ी सड़क पर बाइक और खेत में ट्रैक्टर बन जाए तो क्या होगा। गुजरात के रमेश के इनोवेशन ने यह कारनामा कर पूरे देश को चकित कर दिया। किसान रमेश ने एक इनोवेशन तैयार किया है, जो सड़क पर बाइक का काम करता है और खेत में ट्रैक्टर का काम करता है। रमेश भले ही सिर्फ सातवीं क्लास तक पढ़े हैं, लेकिन गाड़ी के कलपुर्जों की अच्छी खासी समझ रखते हैं। वह लंबे वक्त से अपने खेतों के लिए ट्रैक्टर खरीदना चाह रहे थे, लेकिन जेब ने इजाजत नहीं दी तो उन्होंने बॉडी, ऑटो रिक्शा के इंजन और मारूति वैन के गियर बॉक्स जैसे पार्ट्स को जोड़कर एक मिनी ट्रैक्टर बना डाला। इस इनोवेशन के लिए रमेशमबाई को सिर्फ दो महीने का वक्त लगा। इस पर करीब 60 हजार रूपए की रकम खर्च हुई। थोड़े से जुगाड़ के बाद यह मिनी ट्रैक्टर भी खेतों में वैसी ही जुताई कर लेता है, जैसा बड़ी-बड़ी कंपनियों के ट्रैक्टर करते हैं। रमेश भाई के इस मिनी ट्रैक्टर का इस्तेमाल अब गांव में उनके दोस्त भी करते हैं और कहते हैं कि जो काम बड़ा ट्रैक्टर 30 लीटर के डीजल में करता था, वह काम अब पांच लीटर तेल में हो जाता है। ❖

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना
हिमाचल प्रदेश

सभी भक्तों को गीता जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं

मामूली जेब खर्च से बनाई करोड़ों की कंपनी

भागलपुर के मारवाड़ी परिवार में जन्मे पल्लव नढ़ानी को हाई स्कूल की पढ़ाई के दौरान स्कूल असाइनमेंट्स के लिए एक्सल में चार्ट्स बनाना जरा भी पसंद नहीं था। इसी नापसंद ने उसके जेहन में एक इंटरैक्टिव चार्टिंग सॉल्यूशन तैयार करने के आइडिया को जन्म दिया।

पल्लव ने अपने विचार को लेकर एक वेबसाइट पर कुछ लेख लिखे। उस वक्त लिखने की शुरूआत जेब खर्च हासिल करने के मकसद से हुई थी। इन लेखों के लिए उसे काफी सराहना मिली और 2000 डॉलर का मेहनताना थी। ग्यारहवीं कक्षा के स्टूडेंट के लिए 2000 डॉलर का मेहनताना कुछ कम नहीं था। इससे उसे प्रोत्साहन मिला और उसने अपने विचार को कारोबारी जामा पहनाने का फैसला लिया। सन् 2001 में पल्लव ने अपनी कंपनी फ्यूजन चार्ट्स टेक्नोलॉजिज की नींव रखी। शुरूआत के तीन साल तक पल्लव ने अकेले ही प्रॉडक्ट डेवलपमेंट, वेबसाइट निर्माण, डॉक्यूमेंटेशन, सेल्स एंड मार्केटिंग और कस्टमर सपोर्ट के मोर्चे संभाले। ऑर्डर मिलने शुरू हुए तो पल्लव ने सन् 2005 में अपना पहला ऑफिस खोला और करीब दो वर्ष के अंतराल में 20 लोगों की एक टीम खड़ी की। अब पल्लव को अनुभवी सलाह की भी जरूरत महसूस होने लगी क्योंकि उन्हें सरकारी नियमों और बैकिंग व फाइनेंस की ज्यादा जानकारी नहीं थी, वहीं उन्हें विदेशी क्लाइंट्स के साथ भी डील करना पड़ता था। इस परेषानी को हल करने के लिए उन्होंने अपने पिता की मदद ली। सन् 2009 में पल्लव ने कारोबार को विस्तार देने के लिए अपना ऑफिस कोलकाता के आईटी हब कहलाने वाले सॉल्ट लेक में शिफ्ट किया और टीम की संख्या 20 से बढ़ाकर 50 की। सन् 2010 में फ्यूजन चार्ट्स में 80 कर्मचारी और 25,000 से ज्यादा क्लाइंट्स हैं, जिनमें लिंक्डइन, गूगल, फेसबुक, फोर्ड जैसी कंपनियां शामिल हैं। कंपनी ने धीरे-धीरे अपने पांव पसारे और दुनिया के करीब 120 देशों के फार्मास्यूटिकल्स से लेकर एफएमसीजी तक और शिक्षण संस्थानों से लेकर नासा तक अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। इतना ही नहीं, अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा द्वारा सन् 2010 में इस प्रोडक्ट को चुना गया। महज 30 वर्ष के पल्लव नढ़ानी के बिजनेस ने आज 47 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है। ❖

उत्तराखंड में बारह साल से बिना गर्भ के दूध दे रही गाय

उत्तराखंड के चंपावत जिले में एक गाय 12 वर्षों से बिना गर्भ धारण किए अनवरत दूध दे रही है। सभी इससे हैरान हैं। इस 'कामधेनु' को पाकर पशुपालक परिवार गद्गद है। चंपावत जिले की टनकपुर तहसील के खेतखेड़ा निवासी मदन सिंह महर की गौशाला में बंधी यह गाय लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है। मदन सिंह मेहरा बताते हैं कि वर्ष 2003 में यह गाय चंपावत के मेलाकोट के रहने वाले त्रिलोक सिंह तड़ागी ने उन्हें दी थी। वह इस गाय को चंपावत से टनकपुर लाए। उस समय गाय को एक बछड़ा भी साथ था, जो टनकपुर पहुंचने के कुछ ही दिनों बाद मर गया। उसके बाद से अब तक यह गाय बिना गर्भ धारण किए दूध दे रही है। गाय एक समय में तीन से चार लीटर तक दूध देती है। आजीविका सहयोग परियोजना के पशु चिकित्सक

डॉ. अमित कुमार सिंह का कहना है कि सामान्य परिस्थितियों में गाय का बिना गर्भ धारण किए लगातार दूध देना संभव नहीं है, लेकिन लोहाघाट क्षेत्र में पहले भी इस तरह के एक दो मामे सामने आ चुके हैं।❖

महामना जी के कुछ संस्मरण

महान् देशभक्त, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय जी का व्यक्तित्व देश के सर्वोच्च नेताओं के अग्रगण्य तथा निराला था। वे राष्ट्रीयता के सच्चे उपासक थे, दृढ़ प्रतिज्ञ, कुशल पत्रकार, कुशाग्र वकील, महान् शिक्षाविद् तथा समाज सेवी थे। महामना जी ने आदेश दे रखा था कि जब उनका अवसान हो तो उन्हें काशी न लाया जाए क्योंकि काशी में मरने से मुक्ति मिल जाती है। उनका विश्वास था कि पुनर्जन्म मिलने पर उन्हें मानव मात्र की सेवा का अवसर मिलेगा। उनका प्रिय श्लोक था–

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

सन् 1911 ई. में जब महामना जी काशी विश्वविद्यालय के लिए धन संग्रह अभियान तेजी से चला रहे थे तो उन्होंने बनारस की एक सार्वजनिक सभा में कहा था – ''यदि अपने देश की उन्नति करना है और अपने देश को कला, कौशल, धन–धान्य से पूर्ण समृद्धिशाली बनाना है तो दिल खोल कर शक्ति के अनुसार विश्वविद्यालय की सहायता अवश्य कीजिए। चौबीस करोड़ हिन्दुओं में एक करोड़ रूपया जमा होना कोई बड़ी बात नहीं है। एक–एक आना देने से भी डेढ़ करोड़ रूपया सहज में एकत्र हो सकता है। केवल आपके चेतने भर की देर है। महामना जी ने विश्वविद्यालय के लिए खोज–खोज कर एक से एक विद्वान् प्राध्यापक बुलाए थे। उनमें एक डॉ. गणेश प्रसाद जी गणित के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् थे। इसी प्रकार वनस्पति शास्त्र के प्राध्यापक थे डॉ. बीरबल साहनी, वह भी विश्वविख्यात थे। अभी ''लीडर'' ने अपने दो वर्ष पूरे न किए थे कि अर्थाभाव के कारण उसे बंद कर देने की बात सोची जाने लगी। महामना जी को जब इस स्थिति की जानकारी हुई तो उन्होंने दृढ़तापूर्वक निश्चय किया कि उसे जीवित रखना ही हे। एतदर्थ धन एकत्र करने का काम अपने घर से ही आरम्भ किया। तुम्हारा पांचवां पुत्र है– लीडर। आज वह मरण शैय्याग्रस्त है। उसे जीवित रखना ही है। बस उनकी गद्‌गद् सहधर्मिणी (सौ. कुन्दन देवी) ने अपने सारे स्वर्णाभूषण महामना जी को दे दिए जिन्हें बेच कर महामना जी ने साढ़े तीन हजार रूपए ''लीडर'' की रक्षा में लगाया। तब और धन भी तदर्थ एकत्र किया। एक बार महामना जी का दर्शन करने बम्बई से एक बड़े धनाढ्य सेठ आए। उनसे, महामना जी ने कहा कि विश्वविद्यालय अस्पताल में बहुत रोगी हैं, आप बीस–पच्चीस शय्याओं के लिए आर्थिक सहायता दीजिए किन्तु सूखे सोंठ सेठ ने अपनी असमर्थता व्यक्त की। कुछ दिनों बाद महामना जी कार्यवश बम्बई गए। वहां सुना कि सेठ अस्पताल में पड़े हैं। महामना जी के साथ ज्योतिषाचार्य रामव्यास जी भी थे। व्यास जी से उन्होंने कहा कि चलो सेठ जी को देख आएं। व्यास जी ने निवेदन किया कि उस मक्खीचूस के यहां क्या चलिएगा? महामना जी ने उत्तर दिया चलो तो– और अस्पताल पहुंच गए। सेठ बीमारी का कष्ट झेल रहे थे, महामना जी ने उन्हें प्रेमपूर्वक देखा और ढांढस बंधाया। जब वे विदा होने लगे तो सेठ ने स्वेच्छा से उनसे प्रार्थना की कि मेरी ओर से अस्पताल में पच्चीस शय्याओं का वार्ड बना दीजिए। ❖

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़
एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस
आदि गुदा रोगों के क्षार–सूत्र (आयुर्वेद)
पद्धति से बिना चीर–फाड़ के ऑप्रेशन

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up,Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सैंटर

गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)
Phone : 94184-88660, 94592-88323

अवैध कब्जों का समुचित उपाय करे सरकार

– शास्त्री दीनानाथ गौतम

हिमाचल प्रदेश का लोक जीवन पूर्वत: पहाड़ी जनजीवन ही है, जो कृषि बागवानी और पशुपालन पर निर्भर करता है। अत: यहां का मूल निवासी सदियों से धरतीधन एवं पशुधन के सहारे जीवन व्यतीत करता रहा है, और आज भी हिमाचल का पहाड़ी कृषि बागवानी अथवा पशुपालन को ही अपना जीवन का आधार मानता है, अत: उपरोक्त क्षेत्रों ही व्यवसायों के लिए धरती धन की आवश्यकता रहती है। अत: जो लोग आज भी कृषि बागवानी में परम्परागत धंधे से जुड़े हैं उनको भूमि खण्ड चाहिए होते हैं, क्योंकि हिमाचल की पहाड़ी जनता की आबादी भी तो बढ़ी है, और हिमाचली लगभग एक सौ विद्युत परियोजनाओं से भी विस्थापित एवं प्रभावित भी तो हुए हैं ऐसे लोग कहां बसेरा करेंगे और कैसे वे कृषि बागवानी एवं पशुपालन कर पाएंगे। इसके अतिरिक्त भारत पाकिस्तान का जब बंटवारा हुआ था, तब भी भारत का भूखण्ड हिमाचल प्रदेश प्रभावित हुआ था, अत: जो शरणार्थी अर्थात् रिफ्यूजी यहां पहुंचा उसको हिमाचलियों ने अपने गले लगाया अत: बंधुत्व भावना से उसको बसाया था।

इसी प्रकार महामहिम श्री दलाई लामा जी का जब तिब्बत से निर्वासन हुआ तो हिमाचल प्रदेश ने ही तिब्बतियों को गले लगा कर यत्र-तत्र कॉलोनियों में बसाया था, आज भी स्वयं दलाईलामा और उनके अनुयायी धर्मशाला में एवं अन्यत्र धरा मण्डल में निवास करते हैं। वस्तुत: हिमाचल महात्मा गांधी के अहिंसावादी विचारधारा का प्रबल समर्थक रहा है। अत: शरणागत को भी बंधुत्वभाव स्नेह से अपनी गोद ले लिया, ऐसा सहानुभूति एवं सहनशीलता का प्रतीक हिमाचल प्रदेश आज प्रदेश सरकार द्वारा प्रताड़ित और दण्डित क्यों नजर आ रहा है कि इनके बाग बगीचे कुल्हाड़ों और आरा चला करके कटवाए जा रहे हैं, और भूमि कब्जे बिना अपील सुनकर उजाड़े जा रहे हैं, और नगर एवं ग्राम स्तर पर अवैध मकान-गौशालाएं भी हथौड़े एवं झब्बल, गैंती लेकर तुड़वाए जा रहे हैं। हम मानते हैं कि कुछेक लोगों ने सैकड़ों बिघा भूमि पर नाजायज कब्जे करके वहां बाग बगीचे लगाए हैं जो भूमिहीन एवं कम गुजारा सूची में आते हैं और कुच्छेक एक परियोजनाओं से प्रभावित एवं विस्थापित हैं और बहुत से लोग राष्ट्रीय राजकार्यों एवं स्थानीय यातायात की लपटे में आ रहे हैं उन्हें वह बड़े लोगों द्वारा कब्जा की गई भूमि दिलवाई जा सकती है तथा ऐसे लोगों को सरकार कब्जा दिलवा करके बसा सकती है। अत: कृषि बागवानी एवं भवन गौशाला निर्माण में भी तो हमारे नागरिकों का करोडों राष्ट्र धन लगा हुआ है उसको हथौड़ा लेकर तहस-नहस कर देना अथवा बाग बगीचों को हथौड़ा आरा लेकर उजाड़ देना क्या न्याय की परिभाषा में राष्ट्र धर्म में आता है। मुझे मा. न्यायाधीश महोदय का यह कहना भी तो ठीक नहीं लगा कि सरकार की एक एक इंच भूमि पर सभी कब्जे उठा दिए जाएंगे अर्थात् सरकारी एक इंच भूमि पर भी अवैध कब्जा सहन नहीं होगा या कब्जा करने नहीं दिया जाएगा।

प्रश्न यह उठता है कि कब्जा करने वाला व्यक्ति इस राष्ट्र एवं देश धरती का पुत्र नहीं है?यदि है तो क्या सरकार का यह रवैया धरती के अनुकूल है हिमाचल निवासी 10 प्रतिशत लोग आज भी भूमिहीन हैं। जिसका कारण परिवारिक बंटवारा एवं पूर्वजों द्वारा भूमि बेच देना अथवा अखबारों में ईश्तहार निकाल करके आज्ञाकारी न होने के कारण पुत्रों एवं पुत्र वधुओं को अलग-थलग करना भी नित नई खबरें अखबारों में हम पढ़ते हैं और राष्ट्रीय परियोजनाओं एवं प्रादेशिक सड़क परियोजनाओं से भी तो हजारों लोग बेघर एवं बेजमीन होते जा रहे हैं। अत: जो प्राकृतिक आपदाओं के घेरे में आते हैं उनका क्या होगा, और भूक्षरण एवं भूसख्लन में आने वाले लोगों का भविष्य क्या होगा, उनको भूमि भवन एवं आवास सुविधा देना भी तो सरकार का दायित्व है। केवल एक तरफा ही कब्जा अवैध उठाने की घोषणा करना या इस पर कड़ाई से काम करना कहां तक ठीक है। क्या पहले जो सरकारें थी, जो तमाम वनभूमि को एक तरफा कानूनी दर्जा देकर सरकार ने अपने गले की फांसी बना दिया गया है, अत: इस धरती के वश परम्परागत जन्में एवं पले लोग सिर पर हाथ रख कर रोते नजर आ रहे हैं। सरकार उनकी धरती माता के पुत्रों की कातिल बनकर तबाही मचा रही है। मेरा यहां स्पष्ट करने का मतलब यह है कि सरकार में बैठे लोग एवं जनता द्वारा भेजे गए प्रतिनिधि मूक बधिर बनकर तमाशा देख रहे हैं कि किसी का मकान तोड़कर चकना चूर किया जा रहा है तो किसी का बाग उजाड़ा जा रहा है तो किसी की खेती।❖

महिला स्वावलम्बन की ओर बढ़ते कदम

आज के समय में हर क्षेत्र में महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं अपने हुनर को आगे लाने के लिए वह जो कार्य आसानी से कर सकती हैं उससे ही आजीविका कमाने के लिए प्रयासरत् हैं खलीनि के हंस कुटीर की ये महिलाएं। वैगन किचन के नाम से शुरू किए इस रेस्टोरेंट की मैनेजर हेमा उपाध्याय (इनसैट) ने बताया कि उनके पास ईश्वर का दिया सबकुछ है, लेकिन मैं भी अपना कोई कार्य करना चाहती थी, जब मैंने यह बात अपने पति जयंत कुमार से कही तो उन्होंने कहा कि तुम सबसे अच्छा क्या कर सकती हो तो मैंने कहा कि मैं उत्तम किस्म का शाकाहारी भोजन बना सकती हूँ। बस तो ठीक है उन्होंने कहा शुरू कर दो। घर के बाकी सदस्यों की सहायता से सारी व्यवस्था हो गई। लोगों का भी अच्छा रिस्पोंस मिल रहा है। इस रेस्टोरेंट में खाना पकाने से लेकर सर्व करने का कार्य भी अन्य महिला कर्मचारी ही कर रही है। राजस्थान में भी बहुत सी एनजीओ द्वारा महिलाओं की सहायता से रेस्टोरेंट चलाये जा रहे हैं। जिससे महिलाएं स्वावलंबी हो रही हैं। रेस्टोरेंट कर्मचारी माया सिंह ने बताया

कि इस रेस्टोरेंट से न केवल उसको रोजगार मिला है बल्कि उससे उनके दो बच्चों के जीवन-यापन व पढ़ाई-लिखाई में भी अपने पति को सहयोग कर पा रही हैं। इस दिशा में देवभूमि हिमाचल में यह एक अच्छा प्रयास है। प्रदेश के कई अन्य क्षेत्रों मे भी महिलाएं अपनी आजीविका हेतु भोजन बनाने से लेकर अपना ढ़ाबा चलाने का कार्य कर रही हैं। जिससे लोगों को घर जैसा भोजन उपलब्ध होता है और महिलाओं को रोजगार। प्रदेश की अन्य महिलाओं को भी इस कार्य से प्रेरणा मिले और वह स्वावलम्बन की तरफ बढ़े यही कामना है।❖

एसवीएम करसोग की साक्षी कुरूक्षेत्र में मनवाएगी लोहा

सरस्वती विद्या मन्दिर करसोग की मेधावी छात्रा का चयन आगामी राष्ट्रीय प्रदर्श प्रतियोगिता हरियाणा के लिए हुआ है। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान द्वारा दिल्ली में आयोजित ज्ञान-विज्ञान मेला एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिता में साक्षी ने प्रथम तथा प्रदर्श प्रतियोगिता में नवम् कक्षा के हितेष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। एसवीएम करसोग के प्रधानाचार्य लेखराज ठाकुर द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार साक्षी अब विद्याभारती उत्तर क्षेत्र द्वारा हरियाणा में राष्ट्रीय स्तर के ज्ञान-विज्ञान मेले में प्रदेश का नेतृत्व करेगी। सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली हिरदा राम की पुत्री साक्षी ने एसवीएम करसोग व अपने परिवार को इस उपलब्धि द्वारा गौरवान्वित किया है।❖

कामनापूर्णी गौशाला टूटु में मनाई गई गोपाष्टमी

अखिल भारतीय गौसंवर्धन परिषद् की ओर से कामनापूर्णी गौशाला टूटु में गौपूजन और हवन यज्ञ करने के पश्चात् गोपाष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। क्षेत्र के सम्मानित व गणमान्यों के द्वारा गौवंश सज्जा एवं पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उसके पश्चात् पूर्व सांसद श्रीमती प्रतिभा सिंह द्वारा गौपूजन का कार्यक्रम किया गया। अपने सम्बोधन में गौवंश संरक्षण के प्रति कटिबद्ध होने पर बल दिया तथा गौशाला के द्वारा किए जा रहे अभूतपूर्व कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक झलकियाँ भी प्रदर्शित की गईं। गौशाला के संयोजक श्री रामऋषि भारद्वाज ने सभी सहयोगी जनों के प्रति आभार व्यक्त किया। ❖

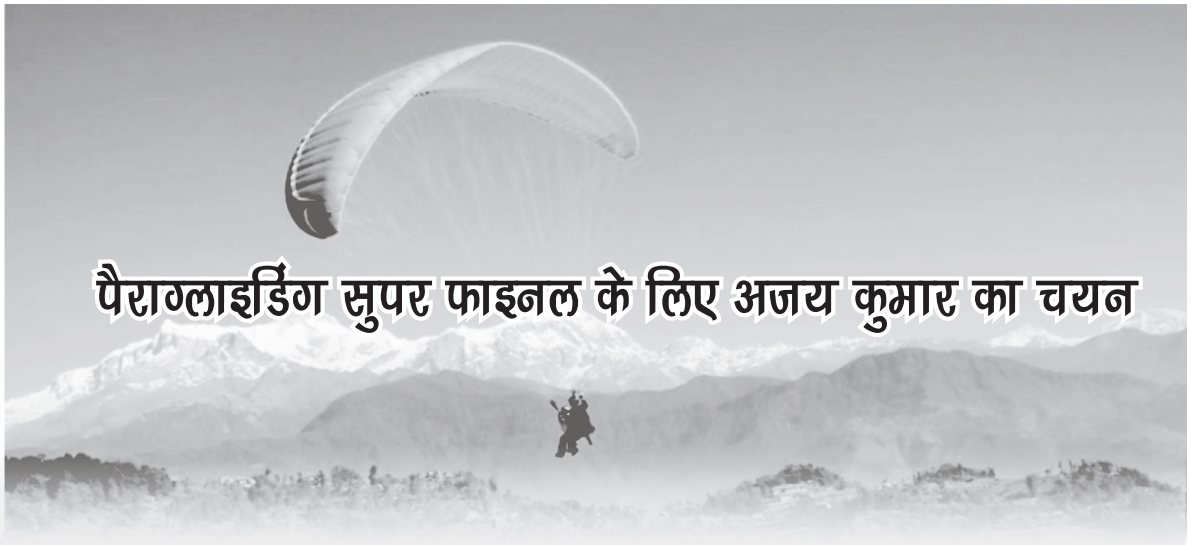

पैराग्लाइडिंग सुपर फाइनल के लिए अजय कुमार का चयन

पैराग्लाइडिंग के अगले साल जनवरी में होने वाले सुपर फाइनल में हिमाचल प्रदेश के अजय कुमार को भी भाग लेने का मौका मिला है। पैराग्लाइडिंग के पांच विश्वकप होने के बाद सुपर फाइनल होता है। इसमें विश्वकप में सभी कैटेगिरी में आगे रहे प्रतिभागियों को भाग लेने का मौका मिलता है। मनाली के अजय कुमार भारत के एकमात्र प्रतिभागी होंगे। अजय कुमार इस समय नेपाल में आयोजित हो रही पैराग्लाइडिंग की प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। हाल ही में बीड़ बिलिंग में हुए पैराग्लाइडिंग विश्वकप में भारतीय कैटेगिरी में वह पहले स्थान पर रहे थे। 12 से 23 जनवरी, 2016 तक मैक्सिको के वैले डी ब्रावो में होने जाने रहे पैराग्लाइडिंग के सुपर फाइनल में अजय कुमार को भाग लेने के लिए पैराग्लाइडिंग वर्ल्ड कप एसोसिएशन ने चुना है। बिलिंग में पैराग्लाइडिंग वर्ल्ड कप में भारतीय टीम में दूसरे स्थान पर रहे अरविंद पाल ने बताया कि यह देश के लिए गौरव की बात है। उन्हें उम्मीद है कि अजय कुमार सुपर फाइनल में देश का नाम रोशन करेगा। अजय कुमार मनाली में भी पैराग्लाइडिंग करते हैं तथा पिछले करीब 15 वर्ष से भी टेंडम व सोलो पैराग्लाइडिंग सिखाते भी हैं। ❖

हिमाचल के राजमा के प्रसंशक ब्राजील के लोग

स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्द्धक और जल्द पकने वाले हिमाचली राजमा की धमक सात समंदर पार तक है। इसकी विदेशों में इतनी मांग है कि प्रदेश के किसान मांग को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। अभी डिमांड का तीसरा हिस्सा ही किसान सप्लाई कर रहे हैं। थोड़े हल्के लाल रंग के इस राजमा की ब्राजील में सबसे अधिक मांग है। ब्राजील के लोगों को हिमाचली राजमा की ज्वाला प्रजाति ज्यादा पसंद है। हिमाचली राजमा को अन्य के मुकाबले स्वादिष्ट माना जाता है। लोगों का मानना है कि इससे गैस्टिक नहीं होती। हर साल 10 मीट्रिक टन हिमाचली राजमा ब्राजील को निर्यात किया जा रहा है। हालांकि, डिमांड करीब चार गुना अधिक 40 मीट्रिक टन की है। यह जानकारी शिमला के जैविक फूड मेले के समापन समारोह में हिओर्ड ऑर्गेनिक कोऑपरेटिव सोसाइटी के निदेशक डॉ. आरएस मिन्हास ने दी। हिमाचल में राजमां सिरमौर, चंबा, किन्नौर, शिमला और भरमौर में होता है। हालांकि, अन्य किस्मों के मुकाबले इस राजमा के दाम अधिक रहते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में जैविक खेती से तैयार होने वाले राजमां की मांग में पर्याप्त वृद्धि हुई है।❖ साभार अमर उजाला

लंदन ने की प्रथम भगवद्गीता सम्मेलन की मेजबानी

श्रीमद्भगवद्गीता को लेकर यह अपने तरह का पहला सम्मेलन था जिसमें गीता के वर्तमान संदर्भ में उपयोगिता पर खुलकर चर्चा की गई। सम्मेलन लंदन में आयोजित किया गया जिसमें भारतीय तथा ब्रिटिश विशेषज्ञों ने एक साथ मिलकर उन असंख्य सवालों का जवाब तलाशने का प्रयास किया जो वर्तमान युग में पूरी दुनिया के लोगों को परेशान कर रहे हैं। सम्मेलन के आयोजकों में से एक इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन्स ने सम्मेलन के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा, ''सम्मेलन का उद्देश्य उन असंख्य सवालों का जवाब तलाशना था जो आज पूरी दुनिया में लोगों को परेशान कर रहे हैं। जैसे कि भगवद्गीता की मदद से हम अपने अंदर मौजूद ऊर्जा का कैसे उपयोग कर सकते हैं? ऐसे ही बहुत से अन्य सवाल हैं जो लोगों के मन में उठते हैं। माना जाता है कि हिन्दुओं का सबसे पवित्र पंथ भगवद्गीता पूरी दुनिया में सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला ग्रंथ है और पूरब की दुनिया के रहस्यों को समझने में यह बहुत मदद करता है। सम्मेलन का समापन 25 सितम्बर को हुआ। इसका आयोजन इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन्स तथा भारतीय दूतावास ने लंदन विश्वविद्यालय द्वारा संचालित स्कूल ऑफ ऑरियंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज के धर्म अध्ययन विभाग के साथ मिलकर किया था। सम्मेलन में भारत और ब्रिटेन के विशेषज्ञों तथा इतिहासकारों ने दो दिन तक विभिन्न सत्रों में भगवद्गीता एवं योग, आधुनिक संस्कृतम लेखन पर भगवद्गीता का प्रभाव जैसे अनेक मुद्दों पर विशद चर्चा की। स्कूल ऑफ ऑरियंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज के सेंटर फॉर जैन स्टडीज पीठ के संस्थापक पीटर फलूगल ने कहा, ''सम्मेलन की शुरूआत छोटी चर्चा से हुई और सबसे पहले यह समझने का प्रयास हुआ कि इस समय हम कहां खड़े हैं। मुझे लगता है कि स्कूल ऑफ ऑरियंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज में हिन्दुत्व से जुड़े अनेक मुद्दों पर भावी चर्चा का यह सम्मेलन आधार बनेगा। महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. कपिल कपूर ने कहा, ''तमाम झंझावातों को झेलते हुए यदि गीता अभी तक जीवित है तो इसका कारण यह है कि यह एक बौद्धिक साहित्य है। यह भारतीय चिंतन तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की हमारी सोच का प्रत्यक्ष प्रस्फुटिकरण है। वर्तमान संदर्भ में इसकी बहुत आवश्यकता है और इसी दृष्टि से इसका विश्लेषण किया जाना चाहिए। सम्मेलन में अलग-अलग विद्वानों को एकजुट करने का श्रेय स्पेन में भारत की पूर्व राजदूत सूर्यकान्ति त्रिपाठी को जाता है। वे कहती हैं कि श्रीमद्भगवद्गीता से हमें असीमित संभावनाओं का पता चलता है। ❖**साभार: हिन्दू विश्व**

ब्रिटेन में तेजी से फैल रहा है इस्लाम

मुंसिफ ने एक विशेष लेख छापा है जिसमें यह दावा किया गया है कि ब्रिटेन में मुसलमानों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। जबकि ईसाइयों की संख्या में गिरावट आ रही है। मस्जिदें आबाद हो रही हैं और गिरजाघर वीरान हो रहे हैं। नई-नई मस्जिदों का निर्माण ब्रिटेन भर में हो रहा है। ब्रिटेन में हुए एक अनुसंधान के अनुसार वहां पर इस्लाम सबसे तेजी से फैल रहा है। ब्रिटिश सोशल यूनिट के सर्वे के अनुसार पिछले दो वर्ष में चर्च ऑफ इंग्लैंड के अनुयायियों की संख्या में 20 लाख की कमी हुई है जबकि इस्लाम को मानने वालों की संख्या में 10 लाख की वृद्धि हुई है। ब्रिटेन में आधे से अधिक लोग किसी भी धर्म को नहीं मानते वे नास्तिक हैं। वर्तमान में इस्लाम ब्रिटेन का दूसरा सबसे बड़ा धर्म है। मुस्लिम के बाद हिन्दू तीसरे नम्बर पर हैं। सिख चौथे, बौद्ध पांचवें, यहूदी छठे स्थान पर हैं। सरकारी सूत्रों के अनुसार ब्रिटेन में इस्लाम का प्रचार तेजी से बढ़ा रहा है और हर वर्ष पांच हजार लोग मुसलमान बन रहे हैं जिनमें से 70 प्रतिशत महिलाएं होती हैं। ढाई लाख ईसाइयों ने पिछले एक दशक में इस्लाम स्वीकार किया है। ❖

सत्यनिष्ठ बालक – सत्यकाम

प्राचीनकाल में उत्तरी हिन्दुस्थान में जाबला नाम की एक निर्धन दासी रहती थी। उसका सत्यकाम नाम का एक पुत्र था। जाबाला दिनभर कड़ा परिश्रम कर अपना तथा अपने प्रिय पुत्र का पेट भरती थी। जबाला गरीब होते हुए भी बहुत प्रामाणिक थी। उसने अपने पुत्र को भी सदा सत्य बोलना सिखाया था। उसने उसका नाम भी सत्यकाम रखा जिसका अर्थ सत्यमें रूचि रखनेवाला है। बालक को आठ वर्ष की अवस्था से बीस वर्ष की अवस्था तक गुरु के पास रहना पड़ता था। वहां पर वह प्रत्येक कार्य में प्रवीण बनता था।

सत्यकाम आठ वर्ष का होते ही अपनी मां से बोला, ' मां, अब मैं शिक्षा ग्रहण करने वन जा रहा हूं।' सत्यकाम में शिक्षा प्राप्त करने की बहुत उमंग थी। जबाला सोच में पड़ गई। छोटा-सा सत्यकाम इतना दूर कैसे रह पाएगा। उसकी आंखों के समक्ष घना वन दिखाई देने लगा तथा सत्यकाम के बिना सूना-सूना लगने वाला उसका घर भी दिखाई देने लगा। सत्यकाम ने पूछा, मां, मैं गुरुजी के पास जा रहा हूं, तो वे मेरे विषय में पूछेंगे न?तब, मैं उन्हें क्या बताऊंगा। तुम्हारे पिता का नाम जबलक्कहै। मेरा नाम जबाला है, इसलिए तुम अपने गुरु से अपना नाम, सत्यकाम जाबाल, इतना ही बताना ।

सत्यकाम गुरु की खोज में वह वन-वन घूमता हुआ गौतम ऋषि के आश्रम में पहुंचा। एक लडका आश्रम में घुसकर सीधे गुरुजी के निकट जा रहा है, गौतम ऋषि कोमल स्वर में बोले, बालक, तुम्हें क्या चाहिए ? सत्यकाम नीचे देखते हुए धीमे स्वरमें बोला, भगवन, मुझे आपसे शिक्षा लेना है। गौतम ऋषि सराहते हुए बोले, 'बालक, तुम्हारी सोच अच्छी है, परन्तु तुम्हारा नाम क्या है?' सत्यकाम शीश झुकाकर बोला, भगवन, मेरा नाम सत्यकाम और माता का नाम जबाला है । इसलिए, मैं सत्यकाम जाबाल हूं।

गौतम ऋषि ने कहा, बालक सत्यकाम, तुमने सत्य कहा, इतना पर्याप्त है । यद्यपि तुम अपने को दासी पुत्र कहते हो, तो भी मेरे विचार से तुम्हें उच्च कुल का पुत्र होना चाहिए । जो सत्य कहता है, उसे मैं ब्राह्मण मानता हूं। परीक्षा लेने हेतु उन्होंने उसे चार सौ गायें सौंपकर उन्हें चराने के लिए वन जाने को कहा । ऐसे काम से शिष्य की बुद्धि का पता चलता था । वे गायें पूर्णत: दुर्बल थीं। सत्यकाम ने कहा, इन गायों की संख्या चार सौ से सहस्र होने पर आश्रम लौटूंगा। सत्यकाम वन में अनेक वर्ष रहा । वह गायों की मन से सेवा करता। एक दिन उसके समक्ष उसके झुण्ड का एक बैल आया। उसके शरीर में वायुदेव (हवा) ने प्रवेश किया, जिससे वह पूंछ उठाकर सींग से भूमि खोदते हुए उछल-कूद करने लगा ।

वह बैल मनुष्यवाणी में बोला, सत्यकाम! सत्यकाम ने यह चमत्कार देखकर विनयपूर्वक कहा, कहिए भगवन्! बैल बोला, हमारी संख्या अब सहस्र हो गई है, अब हमें आचार्यजी के पास ले जाओ। उससे पूर्व मैं तुम्हें थोड़ा ज्ञान देता हूं। तुम्हारी सेवा से मैं सन्तुष्ट हुआ। बैल के रूप में प्रत्यक्ष वायुदेव ही बोल रहे थे। उन्होंने सत्यकाम को ईश्वरीय ज्ञान के एक चौथा भाग का उपदेश किया। वे बोले, सत्यकाम, प्रकाशमान ये चारों दिशाएं ईश्वर की ही अंश हैं । पनडुब्बा पक्षी उडते हुए आया एवं बोला,प्राण, आंखें, कान एवं मन ईश्वर के ही अंश हैं । प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का अंश होता है ।इस प्रकार, सत्यकाम पूर्ण ज्ञानी होकर आश्रम पहुंचा । उसे दूर से देखकर ही गौतम ऋषि सबकुछ समझ गए। गौतम ऋषि बोले, सत्यकाम! ईश्वर का ज्ञान प्राप्त कर तुम तेजस्वी दिखाई दे रहे हो। तुम्हें यह ज्ञान किसने दिया?

सत्यकाम विनयपूर्वक बोला, मनुष्य की अपेक्षा अन्य प्राणियों ने ही मुझे ज्ञान दिया । परन्तु भगवन, आपके मुखसे वह ज्ञान पुन: सुनने की मेरी इच्छा है। मैंने सुना है कि गुरुमुख के अतिरिक्त अन्य स्थान से प्राप्त सर्व विद्या व्यर्थ है।सत्यकाम को, सर्व चराचर सृष्टि में भरे ईश्वर का ज्ञान गौतम ऋषि ने अपनी रसयुक्त वाणी में पुन: समझाया । अन्य सर्व शिष्यों ने लज्जा से शीश झुका दिए। इतने वर्ष वेद रटकर भी उन्हें इतना ज्ञान नहीं हुआ था। आगे चलकर यही सत्यकाम बहुत प्रसिद्ध ऋषि हुए एवं उनसे शिक्षा ग्रहणकर कई शिष्य ज्ञानी बने। ❖

(छांदोग्य उपनिषद की सुप्रसिद्ध कथा पर आधारित)

पहेलियां

1. हरी टोपी वाला है, लाल वर्दी वाला है, खाने के काम मैं आऊं, नाम कहो लाला।
2. एक वस्तु ऐंसी भईया, मुंह खोल के खाई जाय, बिन काटे तथा बिन चबाये खानी पड़े तब आये रूलाई।
3. सिर पर बर्तन मुंह पर लकड़ी, वस्तु एक अजूबा, फूंके जब भी आंसू टपके, चाहे हो फिर नाना-बाबा।
4. नाक पकड़कर, कान पर अड़ती देखे देख दिखाई बिना इसके नजर न आता भाई।

उत्तर- 1. टमाटर, 2. प्याज, 3. फूंकनी, 4. चश्मा।

एक गुनी ने यह गुन कीना, हरियल पिंजरे में दे दीना
देखा जादूगर का कमाल, डाले हरा निकाले लाल
(तोता)

एक ऊँचा ऊँट है, पूंछ ऊँची ऊँट की।
पूंछ से भी ऊँची क्या पीठ ऊँची ऊँट की।। **(कूबड़)**

हंसते -हंसते जीना

पप्पू बाइक पर जा रहा था। पुलिस वाले ने उसे रोका और कहा, सड़क सुरक्षा सप्ताह चल रहा है, आपको हेलमेट लगाने के लिए 2000 रूपए का इनाम मिला है। इस इनाम का क्या करोगे?
पप्पू बोला: मैं इससे अपना ड्राइविंग लाइसेंस बनवा लूंगा।

एक वचन, बहुवचन और प्रवचन में क्या फर्क है?
जब पति बोले वो- एकवचन, बहू बोले वो- बहुवचन और सास बोले तो वह होता- प्रवचन

डॉक्टर ने महला के मुंह में थर्मामीटर रख कर कुछ देर मुंह बंद रखने को कहा।
पत्नी को खामोश देख कर पति ने पूछा... डॉक्टर साहब... ये जादुई चीज कितने की आती है?

प्रश्नोत्तरी-

1. हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक लम्बाई वाला राष्ट्रीय राजमार्ग कौन सा है?
2. प्रसिद्ध छमाहूं देवता का मन्दिर कहां स्थित है?
3. बिहार के नवनियुक्त मुख्यमंत्री का क्या नाम बताईये?
4. भारतीय कालगणना में वर्ष के प्रथम महीने का क्या नाम है?
5. देवासुर संग्राम में अपने शरीर का देवताओं को दान देने वाले ऋषि कौन थे?
6. भारतीय संस्कृति में संस्कारों की कुल संख्या कितनी है?
7. पृथ्वी से चन्द्रमा की कि.मी. में दूरी कितनी है?
8. फ्रेन्च गयाना से छोड़े गये भारतीय संचार उपग्रह का नाम क्या है?
9. हाल ही में किस अधिकारी को संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है?
10. जी-20 राष्ट्रों का शिखर सम्मेलन हाल ही में किस शहर में सम्पन्न हुआ?

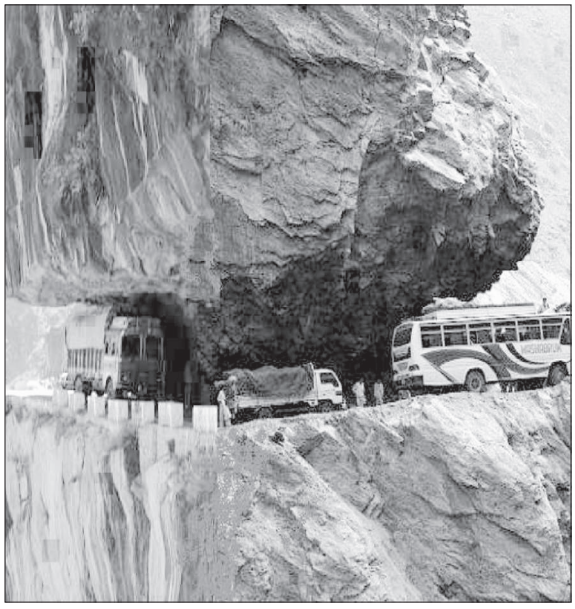

देश की खतरनाक सड़क मार्गों में से हिमाचल प्रदेश के दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्र की एक सड़क का दृश्य

नई दिल्ली झण्डेवालान् में स्व. अशोक सिंघल को श्रद्धाँजलि देते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह सुरेश भैया जी जोशी

हमीरपुर में स्व. अशोक सिंघल को श्रद्धाँजलि देते हुये गणमान्य।

सेवा भारती कुल्लू के कार्यकर्ता कोटला गांव में अग्नि कांड से प्रभावित परिवारों को राहत सामग्री वितरित करते हुए।

MIT GROUP OF INSTITUTIONS BANI TEHSIL BARSAR DISTT. HAMIRPUR

H.P.-174304 (on UNA Express Highway)
B.tech, Polytechnic & International School

B.tech Courses	Polytechnic Courses	MIT International School
Mechnical Engg	Mechnical Engg	Nursery – 10th
Civil Engg	Civil Engg	
Electrical Engg	Electrical Engg	
Electronics and communication engg	Electronics and communication engg	
Computer Engg	Computer Engg	
Electrical and electronics Engg	Automobile Engg	
	Hotel Management	

Facilities:-

Transport Facility Available Separate boys and Girls Hostel Wifi Campus
Experienced and well qualified Faculty Best placements and Merits Record
Special Scholarships and discounts for low income students
Gym and Indoor/ Outdoor games facilities Restaurants and Cafes.

E-mail: mit_poly@yahoo.com
mit_engg@yahoo.com
website: www.mithmr.com

Admission Help line: 9805034000, 9805516018, 9805516003, 9805516030, 9805516001

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION

Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A,
CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

Designed by : **New Era Graphics**, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।